श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह आठवें भाग के

खर्च का ब्यौरा

कागज २९॥ रीम, फी रीम ४३)	१२६८।।)
छपाई फार्म ४९ की, प्रति फार्म १३)	६३७)
जिल्द बँधाई ।।) एक प्रति	३००)
	२२०५।।)
विषयसूची बनाने, प्रमाण ग्रन्थों से मिलान करने तथा प्रेस कॉपी, प्रूफ संशोधन आदि का खर्च	२७००)
	४९०५।।)

कागज, बाइन्डिग क्लाथ, कार्डबोर्ड, रोलर कम्पोजिशन तथा प्रेस की अन्य वस्तुओं के भाव बढ़ जाने और कम्पोज एवं छपाई खर्च कुछ अधिक लगने के कारण ऊपर लिखे हिसाब से एक प्रति की लागत कीमत ८) रूपये से अधिक पड़ी है। फिर भी ज्ञानप्रचार की दृष्टि से पुस्तक की कीमत केवल २) दो रूपया ही रखी गई है। शेष सारा खर्च श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर ने अपनी ओर से लगाया है।

नोट—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सभी भागों की कीमत लागत से बहुत ही कम रखी गई है। इसलिए इन पर कमीशन नहीं दिया जाता। श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था की तरफ से जैन धर्म संबंधी अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाकर देखिये। पुस्तक मँगाने वाले सज्जनों को अपना पता, पोष्ट आफिस और रेल्वे स्टेशन का नाम साफ साफ लिखना चाहिए। पुस्तक वी. पी. से भेजी जाती है।

पुस्तक मिलने का पता:—

(१) पुस्तक प्रकाशन समिति
वूलन प्रेस बिल्डिंग्स

(२) अगरचन्द भैरोदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था

बीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner.

दो शब्द

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सातवें भाग के प्रकाशित होने के करीब तेरह महीनों के पश्चात् यह आठवाँ भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हुए हमें बड़े हर्ष और सन्तोष का अनुभव हो रहा है। आठवें भाग के साथ यह ग्रन्थ समाप्त हो रहा है। निरंतर छ वर्ष के परिश्रम से श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के ये आठ भाग तैयार हुए हैं। छः वर्ष पूर्व सोचे एवं स्वीकार किये हुए कार्य को पूरा कर आज हम अपने को भारमुक्त अतएव हल्का अनुभव कर रहे हैं।

यह आठवाँ भाग पहले के सात भागों का विषय कोष है। इस भाग में सातों भागों में आये हुए विषयों की विस्तृत सूची अकारादिक्रम से दी गई है। सात भागों के बोल जिन आगम एवं सिद्धान्त ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं उन प्रमाणभूत ग्रन्थों का उल्लेख भी इस सूची में किया गया है। प्रमाणभूत ग्रन्थों का पूरा नाम देने से इसका बहुत अधिक विस्तार हो जाता अतएव यहाँ उनका निर्देश संकेत रूप से किया गया है। संकेतों के खुलासे के लिये प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची पृथक् दी गई है और उसमें ग्रन्थों के पूरे नाम तथा ग्रन्थ कर्त्ताओं के नाम, प्रकाशन का स्थान और समय आदि दिये गये हैं।

इस अनुक्रमणिका में पाठकों की जिज्ञासा का ख्याल कर एक ही बोल दो चार तरह से बदल कर दिया गया है एवं बोल के अन्तर्गत भेद प्रभेदों का भी इसमें समावेश किया गया है। सूची तैयार करते समय यह भी ख्याल रखा गया है कि संख्या विशेष एवं विषय विशेष के बोल लगातार एक साथ आ जायँ। इसी तरह गाथाएं और कथाएं भी पास पास रखी गई हैं। शास्त्र विशेष के जितने अध्ययनों के अर्थ इन भागों में आये हैं वे भी एक साथ दिए गये हैं। इस प्रकार पाठकों की सुविधा का ख्याल कर हमने यह अनुक्रमणिका बहुत विस्तृत बनाई है। इस अनुक्रमणिका को तैयार करते समय सातों भागों का प्रमाण ग्रन्थों से, जिनसे कि इन भागों में बोल लिये गये हैं, भी मिलान किया गया है और सातों भागों के बोलों के प्रमाणों में जहाँ कहीं कमी या त्रुटि थी वह इस अनुक्रमणिका में यथासंभव ठीक कर दी गई है। यही कारण है कि इसे तैयार करने में इतना समय लगा है और समिति को इसके लिये पर्याप्त परिश्रम उठाना पड़ा है। सहृदय पाठकों से यह भी निवेदन है कि इस विषय सूची से सात भागों में दिये हुए प्रमाण में कुछ भिन्नता हो तो वे विषयसूची के अनुसार भागों में सुधार कर लेवें।

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में कौनसा विषय किस भाग में कहाँ पर है? पाठकगण इस विषय सूची की सहायता से सुगमतापूर्वक इसका पता लगा सकेंगे तथा साथ में प्रमाण ग्रन्थ होने से शंका अथवा विशेष जिज्ञासा होने पर पाठक उन ग्रन्थों को देखकर आत्मसन्तोष कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त यह विषयकोष जैन पारिभाषिक

शब्दों के लिये जैन कोष का काम भी देगा और पाठक केवल इसी की सहायता से कौनसा विषय किस ग्रन्थ में कहाँ पर है? सहज ही जान सकेंगे।

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह कोई मौलिक रचना नहीं है। प्राकृत, संस्कृत भाषा के सिद्धान्त ग्रन्थों में से चुने हुए विषय सरल हिन्दी भाषा में आवश्यक व्याख्या एवं विवेचन के साथ इन भागों में दिये गये हैं। अतएव हम उन सभी ग्रन्थकारों के, जिनके ग्रन्थों से हमने बोलसंग्रह में बोल लिये हैं, अत्यन्त ऋणी हैं। यदि हमारे अनुवाद, व्याख्या अथवा विवेचन में उन ग्रन्थकारों के आशय से कहीं स्खलना हुई हो तो हम उनसे क्षमा याचना करते हैं। पाठकगण से भी हमारा यह निवेदन है कि यदि उन्हें हमारे इस प्रकाशन में कोई त्रुटि या कमी प्रतीत हो तो हमें अवश्य सूचित करें ताकि हम आगामी संस्करण में उचित सुधार कर सकें। उनकी इस कृपा के लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे।

इस आठवें भाग के छपाने में श्री प० हनुमानप्रसादजी शर्मा शास्त्री ने अध्यवसायपूर्वक बड़ा परिश्रम उठाया है अतएव हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। अन्त में इस ग्रन्थ के लेखन, संकलन, संशोधन प्रकाशन आदि में हमें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन जिन महानुभावों की सहायता प्राप्त हुई है उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए हम अपना यह वक्तव्य समाप्त करते हैं।

पुस्तक प्रकाशन समिति
ऊन प्रेस बिल्डिंग्स, बीकानेर।

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर

पुस्तक प्रकाशन समिति

अध्यक्ष—श्री दानवीर सेठ भैरोदानजी सेठिया।

मंत्री—— श्री जेठमलजी सेठिया।

उपमंत्री—श्री माणकचन्दजी सेठिया।

लेखक मण्डल

श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम.ए., शास्त्राचार्य, न्यायतीर्थ, वेदान्तवारिधि।

श्री रोशनलाल जैन बी. ए., एलएल. बी., न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ, सिद्धान्ततीर्थ, विशारद।

श्री श्यामलाल जैन एम.ए., न्यायतीर्थ, विशारद।

श्री घेवरचन्द्र बाँठिया 'वीरपुत्र' न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ, सिद्धान्तशास्त्री।



भैरोंदान सेठिया

जन्म सं० १९२३ विजया दशमी

फोटो सं० १९९३ अक्षय तृतीया



श्रीमान् धर्मभूषण दानवीर

सेठ भैरोंदानजी सेठिया

की

संक्षिप्त जीवनी

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया का जन्म जैन वीसा ओसवाल कुल में विक्रम संवत् १९२३ विजयादशमी के दिन हुआ। आप के पिता का नाम श्री धर्मचन्दजी था। आप चार भाई थे। श्री प्रतापमलजी और अगरचन्दजी आप से बड़े और हजारीमलजी आप से छोटे थे। आप दो वर्ष के ही थे कि आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। सात वर्ष की अवस्था में बीकानेर में बड़े उपाश्रय में साधुजी नामक यति के समीप आपकी शिक्षा का आरम्भ हुआ। दो वर्ष यहाँ पढ़ कर विक्रम सं० १९३२ में आपने कलकत्ते की यात्रा की। वहाँ से लौटकर आप बीकानेर के समीप शिवबाड़ी गांव में

रहे । मन्दिर, उद्यान और सरोवर से यह गाँव सुहावना है । उस समय राज्य की विशेष कृपादृष्टि होने से यहाँ का व्यापार बढ़ा चढ़ा था । यहाँ सदा बाजार में मेला सा लगा रहता था । यहाँ आप अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री प्रतापमलजी के पास व्यापार का काम सीखने लगे । स० १९३६ में आपने बम्बई की यात्रा की । वहाँ अपने बड़े भाई श्री अगरचन्दजी के पास रह कर आपने बहीखाता जमा खर्च आदि व्यापारिक शिक्षा के साथ अंग्रेजी, गुजराती, आदि भाषाएं सीखीं । शिक्षा के साथ आपने यहाँ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया । यहीं आपकी शिक्षा समाप्त नहीं होती । नवीन ज्ञान सीखने की लगन आपको जीवन भर रही और आज भी है । ज्ञान सीखने के प्रत्येक अवसर से आपने सदा लाभ उठाया है । दूसरे को पढ़ाने और सिखाने में भी आप सदा दिलचस्पी लेते रहे हैं । कई व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय का काम सिखा कर आपने उन्हें सफल व्यापारी बनाया है । आपने अपनी संस्था से भी कई सुयोग्य व्यक्ति तैयार किये हैं एवं उन्हें ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाई है ।

संवत् १९४० में आप देश आये । इसी वर्ष आप का विवाह हुआ । कुछ समय देश में ठहर कर संवत् १९४१ में आप पुनः बम्बई पधारे । यहाँ आकर आप एक फर्म में, जिसमें चालानी का काम होता था, मुनीम के पद पर नियुक्त हुए । आपके बड़े भाई श्री अगरचन्दजी इस फर्म के साझीदार थे ।

बम्बई में सात वर्ष रहकर सं० १९४८ में आप कलकत्ते गये और वहाँ आपने अपनी संचित पूँजी से मनिहारी और रंग की दूकान खोली और गोली सूता का कारखाना शुरू किया । सफल व्यापारी में व्यापारिक ज्ञान, अनुभव, समय की सूझ, साहस, अध्यवसाय, परिश्रमशीलता, ईमानदारी, वचन की दृढ़ता, नम्रता

तथा स्वभाव की मधुरता आदि जो गुण होने चाहिये वे सभी आप में विद्यमान थे। इसलिये थोड़े ही समय में आपका व्यापार चमक उठा। धीरे धीरे आपने प्रयत्न करके भारत से बाहर बेल्जियम, स्विज़रलैंड और बर्लिन आदि के रंग के कारखानों की तथा गबलंज (Gablonz)आष्ट्रिया के मनिहारी के कारखानों की सोल एजेन्सियाँ प्राप्त कर लीं। फलतः आपको अधिक लाभ होने लगा और काम भी विस्तृत हो गया। इसी समय आपके बड़े भाई श्री अगरचन्दजी भी आपकी फर्म में सम्मिलित हो गये। अब फर्म का नाम 'ए. सी. बी सेठिया एन्ड कम्पनी' रखा गया। कार्य के विस्तृत हो जाने से आपने कर्मचारियों को बढ़ाया। फर्म की सुव्यवस्था के लिये आपने एक अंग्रेज को असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त किया और पत्र व्यवहार के लिये एक वकील को रक्खा। कर्मचारियों के साथ आपका व्यवहार स्वामी-सेवक का नहीं किन्तु परिवार के सदस्य का सा रहा है। आप कर्मचारियों से काम लेना खूब जानते हैं और उन्हें सब तरह निभाते भी हैं। उक्त अंग्रेज आपके पास २७ वर्ष रहा और वकील बाबू आज भी आपके सुपुत्र श्री जेठमलजी साहब की फर्म में हैं।

आप स्वभाव से ही कर्मठ और लगन वाले हैं। आपने कार्य करना ही सीखा है, विश्राम तो आपने जाना ही नहीं। जिस कार्य को आपने हाथ में लिया, उसे पूरा किये बिना आपने कभी नहीं छोड़ा। व्यापारिक जीवन में ऐसी सफलता पाकर भी आपने विश्राम नहीं लिया। आप और आगे बढ़ना चाहते थे। फलस्वरूप आपने हावड़ा में 'दी सेठिया कलर एन्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड' नामक रंग का कारखाना खोला। यह कारखाना भारतवर्ष में रंग का सर्व प्रथम कारखाना था। कारखाने से तैयार होने वाले सामान की खपत के लिये आपने भारत के प्रमुख नगरों–कल-

कत्ता, वम्बई, मद्रास, कराची, कानपुर, देहली, अमृतसर और अहमदावाद में अपनी फर्म की शाखाएं खोलीं । इसके सिवा जापान के ओसाका नगर में भी आपने ऑफिस खोला।

यहाँ यह वता देना भी अप्रासंगिक न होगा कि कारखाने और ऑफिस में विभिन्नकार्यों पर कुशल व्यक्तियों के नियुक्त होने पर भी आप आवश्यकता पर छोटे से वड़े सभी काम निस्संकोच भाव से कर लेते थे। शुरू से अन्त तक सभी कामों की जानकारी आप रखते थे। सर्वथा लोगों पर आपका कार्य निर्भर रहे यह आपको कतई पसन्द न था। यही कारण है कि रंगों के विश्लेषण के फॉर्मुले सीखने के लिये आपने एक जर्मन विशेषज्ञ को केवल दैनिक पाँच मिनिट के लिये ३००) मासिक पर नियुक्त किया एवं उसके लिये आपने निजी प्रयोगशाला स्थापित की।

संवत् १९५७ में एक पुत्री (वसन्तकंवर) और दो पुत्रों (श्री जेठमलजी और पानमलजी) को छोड़कर आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया। आपकी पत्नी धर्मात्मा और गृहकार्य में बड़ी दक्ष थीं। इसी कारण आप गृह-व्यवस्था की चिन्ता से सदा मुक्त रहे एवं अपनी सभी शक्तियाँ व्यापार व्यवसाय में लगा सके थे। पहली धर्मपत्नी के स्वर्गवास होने पर आपका दूसरा विवाह हुआ। कर्त्तव्यनिष्ठ सेठियाजी का उस समय व्यापार-व्यवसाय की ओर ही विशेष ध्यान था। आप कुशलतापूर्वक व्यापार व्यवसाय में लगे रहे और उत्तरोत्तर उन्नति करने लगे। सं० १९७१ (सन् १९१४) के गत महायुद्ध में आपको रंग के कारखाने से आशातीत लाभ हुआ।

संवत् १९६५ में आप एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गये। इस समय आप कलकत्ते थे। वहाँ के प्रसिद्ध डॉक्टर और वैद्यों का इलाज हुआ पर आपको कोई लाभ न पहुँचा। अन्त में आपने

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

श्री अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था,

संस्था–भवन, बीकानेर



अज्ञानं तमसां पतिं विदलयन् सत्यार्थमुद्भासयन् ।
भ्रान्तान् सत्पथ दर्शनेन सुखदे मार्गे सदा स्थापयन् ॥
ज्ञानालोकविकासनेन सततं भूलोकमालोकयन् ।
श्रीमद्भैरवदानमान पदवी पीठः सदा राजताम् ॥

कलकत्ता के प्रसिद्ध होमियोपैथिक डॉक्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार से इलाज करवाया और आप स्वस्थ हुए। इसी समय से आपको होमियोपेथी चिकित्सा-पद्धति में अपूर्व विश्वास हो गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ी और उक्त डॉक्टर के सुयोग्य पुत्र डॉक्टर जतीन्द्रनाथ के पास आपने होमियोपेथी का अभ्यास किया एवं इसमें प्रवीणता प्राप्त की। तभी से आप होमियोपेथी साहित्य देखते रहे है एवं जनता में अमूल्य दवा वितरण करते रहे हैं। वर्षों के अनुभव ने आपको इस प्रणाली का विशेषज्ञ बना दिया है।

सेठ साहेब ने केवल धन कमाना ही नहीं सीखा पर आप

विक्रम संवत् १९६९ तदनुसार सन् १९१३ ई. में सेठ साहेब ने बीकानेर नगर में किंग एडवर्ड मेमोरियल रोड़ पर एक दूकान बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से खोली। नाना प्रकार के फैन्सी बढ़िया सामान और नई नई फैशन की चीजों के लिये यह बीकानेर की प्रसिद्ध दूकान है। यहाँ से सेठ, साहूकार, रईस और ऑफिसर लोग सामान खरीदते हैं। इसे सफलता पूर्वक चला कर सेठ साहेब ने यह दूकान अपने द्वितीयपुत्र श्री पानमलजी को दे दी। दूकान के पीछे उससे जुड़ी हुई हवेली है। सेठ साहेब ने पानमलजी को दूकान और हवेली का पूरा मालिक बना दिया है और तारीख १४-१०-१९३० ई. को इन्हीं के नाम पर राज्य से इस जायदाद का पट्टा बनवा दिया है। पानमलजी ने आसपास और जमीन खरीद कर इस जायदाद को बढ़ाया है और काफी लागत लगा कर दूकान को दुबारा बनाया है जो कि नई फैशन का दुमंजिला विशाल भवन है। अभी पानमलजी और उनके पुत्र कुन्दनमलजी इस दूकान को बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से ही चला रहे हैं।

सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाओं के विभिन्न विभागों द्वारा पिछले बाईस वर्षों में, समाज में शिक्षा एवं धर्म प्रचार के जो महत्वपूर्ण कार्य हुए वे समाज के सामने हैं।

सं० १९७९ में आपके पुत्र उदयचन्दजी का असामयिक देहान्त होगया। इस घटना से आप अत्यन्त प्रभावित हुए। व्यापार व्यवसाय से आप का मन हट गया। अतएव कलकत्ते का विस्तृत व्यापार समेट कर आप बीकानेर पधार गये। आपने पारमार्थिक संस्थाओं का कार्य हाथ में लिया और अपनी सारी शक्तियाँ संस्थाओं की उन्नति में लगा दीं। धार्मिक ज्ञानवृद्धि का भी आपने यह अच्छा सुयोग समझा। आपने थोकड़े, बोल और स्तवनों का स्वयं संग्रह किया और उन्हें प्रकाशित कराया। इसके सिवा आपने संस्कृत, प्राकृत, अर्द्धमागधी, आगम, न्याय, धर्मशास्त्र, हिन्दी, नीति और कानून विषयक पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। इस वृद्धावस्था में भी आपने निरन्तर सं० १९९६ से पाँच वर्ष तक अथक परिश्रम कर अपूर्व लगन के साथ जैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठ भाग, सोलह सती और आर्हत प्रवचन ग्रन्थ तैयार करा प्रकाशित कराये हैं। आपकी ज्ञानपिपासा एवं ज्ञान प्रचार की भावना के फलस्वरूप संस्था से १०७ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

आपकी दानवीरता एवं समाज तथा धर्म की सेवा का सम्मान कर सन् १९२६ में अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के कार्यकर्त्ताओं ने आपको कॉन्फरन्स के बम्बई में होने वाले सप्तम अधिवेशन का सभापति चुना। कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन बड़ा शानदार और सफल हुआ। आपकी दानशीलता के प्रभाव से उस अधिवेशन में एक लाख से अधिक फंड इकट्ठा हुआ।

समाज और धर्म की सेवा के साथ आपने बीकानेर नगर और राज्य की भी सेवा की। लगभग दश वर्ष तक आप बीकानेर म्यूनिसि-

पल बोर्ड के कमिश्नर रहे। सन् १६२६ में सबसे पहले जनता में से आप ही सर्व सम्मति से बोर्ड के वाइस प्रेसिडेन्ट चुने गये। सन् १६-३१ में राज्य ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया। लगभग सवा दो वर्ष तक आप बेंच ऑफ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट्स में कार्य करते रहे। आपके फैसले किये हुए मामलों की प्रायः अपीलें हुईं ही नहीं, यदि दो एक हुईं भी तो अपीलेट कोर्ट में भी आप ही की राय बहाल रही। इससे आपकी नीर-क्षीर विवेकिनी न्यायबुद्धि का सहज ही अन्दाज हो जाता है। ।सन् १६३८ में म्यूनिसिपल बोर्ड की ओर से आप बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य चुने गये। निस्स्वार्थभाव से बीकानेर की जनता की सेवा कर आप उसके कितने विश्वस्त एवं प्रिय बन गये, यह इससे स्पष्ट है ।

सन् १६३० में संयोगवश सेठियाजी को पुनः व्यवसायक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। बीकानेर में बिजली की शक्ति से चलने वाला ऊन की गाँठें बाँधने का एक प्रेस बिकाउ था। योग्य कार्यकर्त्ताओं के अभाव से वह बन्द पड़ा था। प्रेस के मालिक उसे चला न सके थे। क्रियात्मक शिक्षा देकर अपने पुत्रों को व्यापार-व्यवसायमें कुशल बनाने के उद्देश्य से आपने उक्त प्रेस खरीद लिया। राज्य ने आपको रियासत भर के लिये प्रेस की मोनोपोली दी। आपने प्रेस को एवं बीकानेर के ऊन के व्यापार को उन्नति देने का निश्चय किया। प्रेस के अहाते में आपने इमारतें,गोदाम और मकानात बनवाये और व्यापारियों के लिये सभी सहूलियतें प्रस्तुत कीं। आपने कमीशन पर व्यापारियों का खरीद फरोख्त का काम भुगताना, आर्डर सप्लाई एवं यहाँ से सीधा विलायत में माल चढ़ाने का काम शुरू किया। माल पर पेशगी रकम देकर भी आपने व्यापारियों को प्रोत्साहित किया। आपने प्रयत्न करके व्यापारियों के हक में राज्य एवं बीकानेर स्टेट रेल्वे से सुविधाएँ प्राप्त कीं। सभी प्रकार की सुवि-

धाओं के होने से बीकानेर राज्य एवं बाहर के व्यापारी यहाँ काफी तादाद में आने लगे। ऊन का कारबार करने वाली बड़ी बड़ी कम्पनियाँ भी यहाँ अपने कर्मचारी रखने लगीं। इस प्रकार उत्तरोत्तर प्रेस का काम बढ़ने लगा। सन् १९३४ में आपने ऊन के फॉटों से ऊन निकालने के लिये ऊल बरिंग फेक्टरी (Wool Burıng Factory) खरीदी। राज्य ने इसके लिये भी आपके हक में मोनोपोली स्वीकृत की। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में आपकी लगन और परिश्रम ने आपके संकल्प को कार्य रूप में परिणत कर दिया। आज ऊन प्रेस सन् १९३० के ऊन प्रेस से कुछ और ही है। यहाँ सैंकड़ों मजदूर लगते हैं और हजारों मन ऊन का व्यापार होता है। हजारों गाँठें बँधती हैं और विलायत भेजी जाती हैं। प्रेस की साख ने लिवरपूल के मार्केट को भी प्रभावित कर रखा है। प्रेस के मार्के वाली गाँठें वहाँ अपेक्षाकृत ऊँचे भाव में बिकती हैं।

सेठ सा० की धार्मिकता एवं परोपकार-भावना के फलस्वरूप ऊनप्रेस में भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये, होमियोपेथिक एवं आयुर्वेदिक औषधियों के लिये तथा साधारण सहायता आदि के लिये पृथक् पृथक् फंड कायम किये हुए हैं और सभी में अलग अलग रकम जमा कराई हुई है। रकम के ब्याज की आय से उपरोक्त सभी कार्य नियमित रूप से चल रहे हैं। ऊनप्रेस के आढ़तिये भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये लागा देते हैं।

इस प्रकार ऊन प्रेस को सब भाँति समुन्नत कर सेठ साहेब ने उसे अपने सुयोग्य पुत्र श्री लहरचंदजी, जुगराजजी, और ज्ञानपालजी के हाथ सौंप दिया है एवं आप व्यापार व्यवसाय से सर्वथा निवृत्त हो धर्मध्यान में संलग्न हैं। पिछले पाँच वर्षों से धार्मिक साहित्य पढ़ना, सुनना और तैयार करवाना ही आपका कार्यक्रम रहा है।

परिवार की दृष्टि से सेठ सा० जैसे भाग्यशाली विरले ही मिलते हैं। आप के पाँच पुत्र हैं। सभी शिक्षित, संस्कृत एवं व्यापारकुशल हैं। सभी जुदे किये हुए हैं एवं जुदे २ व्यापार व्यवसाय में लगे हुए हैं। पाँचों पुत्र सेठजी के आज्ञानुवर्ती हैं एवं सभी भाइयों में परस्पर सराहनीय प्रेम है। यही नहीं आपके छः पौत्र, दो प्रपौत्र, दो पौत्री और दो प्रपौत्री हैं। सेठजी के दो पुत्रियों में से छोटी पुत्री मौजूद है एवं तीन दोहिते और पाँच दोहितियाँ हैं।

सेठजी सफल व्यापारी, समाज और राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त, बड़े परिवार के नेता एवं सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप दानवीर और परोपकारपरायण हैं। धर्म और परोपकार के कार्यों में आपने उदारता के साथ धन ही नहीं बहाया किन्तु तन और मन का योग भी आपने दिया है। बचपन में माता और बड़ी बहिनों से धार्मिक संस्कार प्राप्त करने वाले एवं धर्मस्थान में शिक्षा का श्रीगणेश करने वाले सेठ साहेब की प्रवृत्ति सांसारिक कार्यों के बीच रहते हुए भी सदा धार्मिक रही है। सांसारिक वैभव में जलकमलवत् निर्लिप्त रह कर आपने नाम से ही नहीं, कर्म से भी धर्मचन्द का पुत्र होना सिद्ध किया है। आपने बचपन में ही श्री हुक्मीचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज से धर्म श्रद्धा ग्रहण की थी। आप गुणों के ही पुजारी हैं। पंच महाव्रतधारी निर्मल आचारवाले सभी साधु आपके लिये पूज्य हैं। आपने अपने जीवन में कभी चाय, भंग, तमाखू या अफीम का सेवन नहीं किया। सात व्यसनों का आपके त्याग है तथा रात्रिभोजन का भी आपके नियम है। आपने श्रावक के बारह व्रत धारण किये हैं और जीवन के पिछले वर्षों में आपने शीलव्रत भी धारण किया है। ग्रहण किये हुए त्याग प्रत्याख्यान आप दृढता के साथ पालन करते रहे हैं।

आपकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि आप स्वनिर्मित हैं। आप सदा स्वावलम्बी, साहसी, अध्यवसायशील एवं कर्मठ रहे हैं। सभी प्रकार से सम्पन्न होकर भी आप सर्वथा निरभिमान हैं। 'सादा जीवन और उच्च विचार' इस महान् सिद्धान्त को आपने जीवन में कार्य रूप दिया है। आपका चरित्र पवित्र एवं अनुकरणीय है। आप में परमहंसों का सा त्याग, साधुओं का सा कर्मसंन्यास और वीरों की सी कर्मनिष्ठा है। आपने क्या नहीं किया और क्या नहीं पाया परन्तु सांसारिक विभूति के मोह बन्धन में आपने अपने को कभी नहीं बाँधा। आपके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, ब्यावर ने आपको 'धर्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया है। यह उपाधि सब तरह से आप जैसे महापुरुष को शोभा देती है। हमारी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आप चिरायु हों।

बीकानेर (राजपूताना)
भादवा सुद ७ वि० सं० २००१
ता० २६-७-४४ ई०

रोशनलाल जैन
बी.ए., एल एल. बी.,
न्याय-काव्य-सिद्धान्ततीर्थ, विशारद.

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी का वंश

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी के चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ हुईं। उनके नाम—श्रीप्रतापचन्दजी, श्रीअगरचन्दजी, श्रीभैरोंदानजी, श्री हजारीमलजी, चाँदाबाई, घमाबाई, पन्नीबाई, मीराबाई और टुगीबाई। श्रीमान् प्रतापचन्दजी के तीन पुत्रियाँ और तीन पुत्र हुए। उनके नाम—तख्खुबाई, सुगनीबाई, मानबाई। सुगनचन्दजी, हीरालालजी, चनणमलजी। इन तीनों के कोई सतान न हुई। इन तीनों का तरुणावस्था में ही स्वर्गवास होगया। श्रीमान् चनणमलजी की धर्मपत्नी अभी मौजूद है। उन्होंने श्रीमान् जेठमलजी सेठिया के ज्येष्ठ पुत्र श्री माणकचन्दजी को गोद लिया।

श्रीमान् अगरचन्दजी के कोई सन्तान न हुई। उन्होंने अपने लघुभ्राता श्रीमान् भैरोंदानजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमलजी को गोद लिया।

श्रीमान् भैरोंदानजी के ६ पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। वे इस प्रकार हैं—१ वसंतकुंवर, २ जेठमलजी, ३ पानमलजी, ४ लहरचन्दजी, ५ उदयचन्दजी, ६ जुगराजजी, ७ ज्ञानपालजी, ८ और मोहिनीबाई। संवत् १९९६ मिति काती सुद ९ को वसन्तकुंवर बाई का स्वर्गवास हो गया। उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं।

श्रीमान् जेठमलजी के चार पुत्र और एक पुत्री हुई। उनके नाम—माणकचन्दजी, केशरीचन्दजी, मोहनलाल, जसकरण और स्वर्णलता। १९९४ में केवल आठ वर्ष की अवस्था में ही जसकरण का स्वर्गवास हो गया। श्री माणकचन्दजी के इस समय एक पुत्र कुसुमकुमार और एक पुत्री आशालता है।

श्रीमान् पानमलजी के इस समय एक पुत्र श्री कुन्दनमलजी (भवरलालजी) है । कुन्दनमलजी के एक पुत्र रविकुमार और एक पुत्री लीला है ।

श्रीमान् लहरचन्दजी के इस समय एक पुत्र श्री खेमचन्दजी और एक पुत्री चित्ररेखा है ।

संवत् १९७९ में श्रीमान् उदयचन्दजी का केवल १५ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्गवास हो याग । उनके स्वर्गवास के पश्चात् करीब १६ महीनों के बाद उनकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया

श्रीमान् जुगराजजी के इस समय एक पुत्र श्री चेतनकुमार है। बाबू ज्ञानपालजी अभी अविवाहित है ।

मोहिनीबाई के इस समय एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं ।

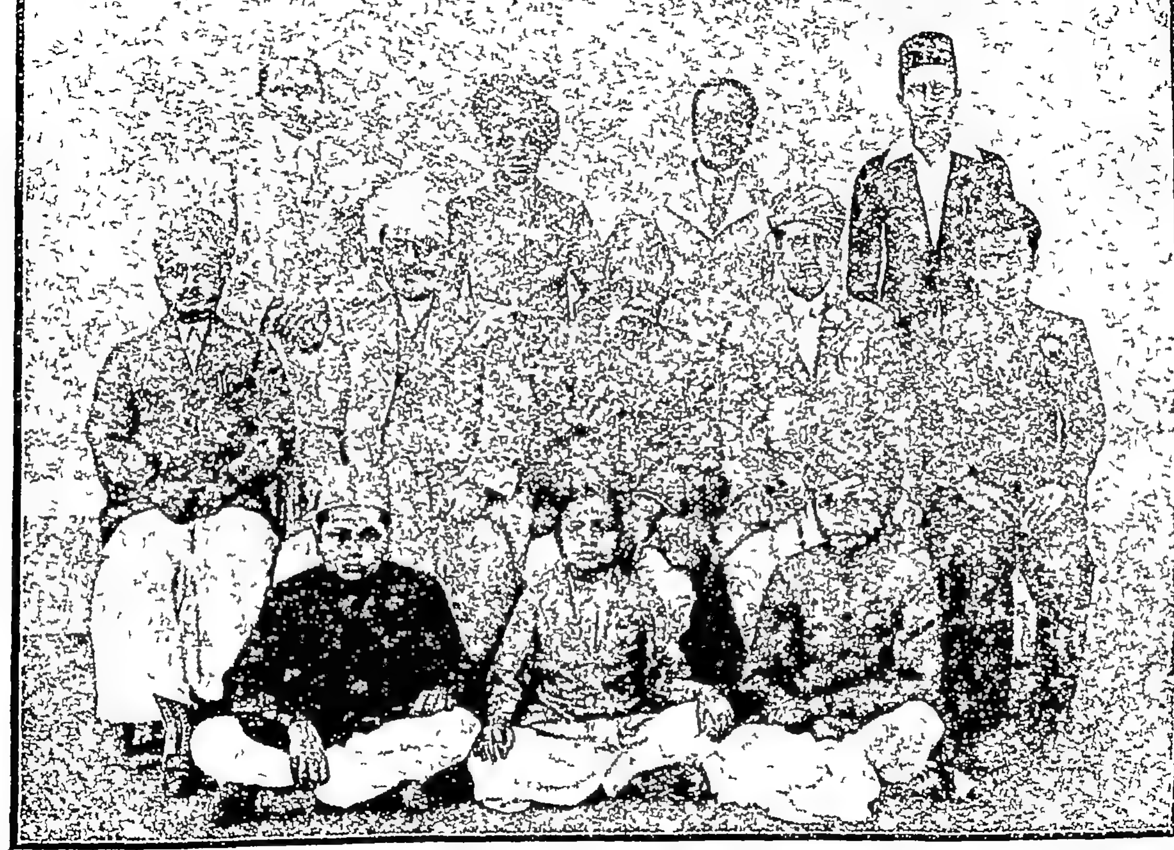
श्रीमान् भैरोंदानजी से छोटे भाई श्रीमान् हजारीमलजी थे । उनका स्वर्गवास युवावस्था में ही हो गया। उनकी धर्मपत्नी श्री रत्नकुंवरजी को बचपन से ही धर्म के प्रति विशेष रुचि एवं प्रेम था। सवत् १९३६ में केवल छः वर्ष की अवस्था में आपने रतलाम में पूज्यश्री उदयसागरजी महाराज के पास सम्यक्त्व ग्रहण की थी। पति का स्वर्गवास हो जाने पर धर्म के प्रति आपकी रुचि और भी तीव्र हो गई । आपको संसार की असारता का अनुभव हुआ और वैराग्य भावना जागृत होगई । संवत् १९६५ में समस्त सांसारिक वैभवों का त्याग कर श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज के पास श्रीरंगूजी महाराज की सम्प्रदाय में श्री मैनाजी महाराज की नेश्राय में पूर्ण वैराग्य के साथ दीक्षा अंगीकार की। ३६ साल हुए आप पूर्ण उत्साह के साथ संयम का पालन करती हुई आत्म कल्याण की साधना में अग्रसर हो रही हैं ।

भादवा सुद ७ वि० संवत् २००१

१

२

३



१ पक्ति— माणकचन्द, केशरीचन्द, जुगराज, कुनणमल

२ ,, लहरचन्द, जेठमल, भैरोंदानजी, पानमल ज्ञानपाल

की पढ़ाई चलती रही है। एफ. ए. परीक्षा में कुल १२ छात्र प्रविष्ट हुए थे जिनमें ८ उत्तीर्ण हुए। मैट्रिक परीक्षा में ३० छात्रों में २७ पास हुए। इस वर्ष कालेज में बी ए. कक्षा नहीं रखी गई किन्तु आगामी सेशन से पुन बी ए. कक्षा खोल दी जायगी।

कन्या पाठशाला

इस पाठशाला में पूर्ववत् पहली से लेकर चौथी तक चार कक्षाएं चलती रही हैं। इन कक्षाओं में कन्याओं को हिन्दी, गणित, स्वास्थ्य, धर्म, भूगोल, वाचिका, सिलाई और कशीदा आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता रहा है। छात्राओं की साल भर में सख्या ७० और ८० के बीच में रही।

समाज सेवा विभाग

इस विभाग द्वारा समाज सेवा सबधी सभी प्रकार के कार्य किये जाते रहे हैं। इन में श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था के आय व्यय का हिसाब रखना तथा ग्राम्य पाठशालाओं के संचालन की देखरेख एव प्रबंध का कार्य होता रहा है।

इस विभाग द्वारा संत मुनिराजों एवं महासतियों के विहारादि सबधी पत्रव्यवहार और दीक्षार्थी भाई बहनों के लिये भण्डोपकरण का प्रबध भी होता रहा है।

इस विभाग द्वारा इस वर्ष ४२३।।।≈)।। मूल्य की सस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भिन्न भिन्न संस्थाओं और व्यक्तियो को भेंट स्वरूप दी गई हैं इसके अतिरिक्त विना मूल्य की १०२ पुस्तकें भी इस विभाग द्वारा भेंट दी गई।

प्रिन्टिंग प्रेस (छापाखाना)

इस विभाग में इस वर्ष सेठिया ग्रन्थमाला की १०५ से १०७ तक की नवीन पुस्तकों का मुद्रण हुआ। युद्ध जन्य कठिनाइयों के कारण इस साल प्रेस का काम मदगति से चला। कर्मचारियों तथा कागज की कमी के कारण केवल नीचे लिखी पुस्तकें छप सकीं। समय को देखते हुए यह भी सतोषजनक ही है। (१) आर्हतप्रवचन (२) श्रीप्रतिक्रमणसूत्र मूल ७ वीं आवृत्ति (३) श्री सामायिकसूत्र सार्थ ५ वीं आवृत्ति (४) श्री जैनसिद्धान्त बोल सग्रह सातवाँ भाग (५) श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा सेठिया की सक्षिप्त जीवनी (६) हिन्दी बाल शिक्षा दूसरी प्राइमर। अभी श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठवें भाग की छपाई हो रही है।

ग्रन्थालय और वाचनालय

इस वर्ष भिन्न भिन्न भाषाओं की कुल ३१० नई पुस्तकें ग्रन्थालय में आई। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और त्रैमासिक पत्र पत्रिकाएँ इस वर्ष भी आती रही हैं और उन्हें वाचनालय में रखा जाता रहा है। इस वर्ष १२७ सदस्यों ने ३३६३ पुस्तकें पढने के लिए पुस्तकालय से लीं तथा वाचनालय से लाभ उठाया।

ग्रन्थालय में इस समय हिन्दी, सस्कृत, गुजराती, अंग्रेजी, पत्राकार, हस्तलिखित आदि कुल मिलाकर ६६०६ पुस्तकें संगृहीत हैं। विवरण नीचे लिखे अनुसार है –

हिन्दी	**३९८१**
कोष और व्याकरण	१२७
इतिहास और पुरातत्त्व	१४५
दर्शन और विज्ञान	१४६
धर्म और नीति	१३७३
साहित्य और समालोचना	२५६
काव्य और नाटक	४४२
उपन्यास और कहानी	३८४
जीवन चरित्र	१२२
राजनीति और अर्थशास्त्र	१३७
ज्योतिष और गणित	३७
स्वास्थ्य और चिकित्सा	१८७
भूगोल और यात्राविवरण	३४
कानून	८४
बाल साहित्य	२१३
विविध	२६४
संस्कृत	**९४३**
कोष और व्याकरण	१६५
साहित्य, काव्य, नाटक, चरित्र और कथा	२३५
आर्ष ग्रन्थ	१३४
दर्शन शास्त्र	६६
धर्म शास्त्र और नीति	१८४
स्तुति स्तोत्रादि	३१
आयुर्वेद (वैद्यक)	५२
ज्योतिष शास्त्र	२०
विविध	२३
अंग्रेजी	**१६८०**
Works of reference	170
History and Geography	213
Theology, Philosophy and Logic	287
Law & Jurisprudence	83
Literature	264
Fiction	225
Politics & Civics	8
Business & Economics	45
Science and art of medicine	157
Science & mathematics	56
Biography & auto-biography	109
Industrial science	50
Art of teaching	13
जर्मन, फ्रेंच आदि	**१०३**
पत्राकार शास्त्र एवं ग्रन्थ	**५३०**
हस्तलिखित ग्रन्थ	**१२३८**
गुजराती	११६१

ग्रंथ निर्माण विभाग

इस साल छापाखाना विभाग में छपने वाले समस्त ग्रन्थों का संशोधन इसी विभाग के कर्मचारियों द्वारा हुआ। श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था की दश वर्षीय

रिपोर्ट लिखी तथा संशोधित की गई। श्री जैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठवें भाग की पांडुलिपि तैयार की गई और आवश्यक संशोधन परिवर्तन कर प्रेस कापी तैयार की गई।

सन् १९४४ के आय-व्यय का संक्षिप्त विवरण

१६६०३॥-)। कलकते के मकानों के किराये के मास बारह के
१७८२॥।≤) व्याज
२०१) श्रीमान् लहरचंदजी सेठिया से प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीक्षोपकरणादि में खर्च करने के लिये
१०१) श्री मगनबाई स्वर्गीय धर्मपत्नी जेठमलजी सेठिया से प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीक्षोपकरणादि में खर्च करने के लिये
५२००) श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा सेठिया से प्राप्त हुए
२०००) छात्रवृत्ति देने के लिये
२०००) बोर्डिंग के लिये
१२००) सहायता में देने के लिये

११९८५॥-) श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था में खर्च हुए
६३७॥)। सेठिया प्रिंटिंग प्रेस में
४५) 'बोर्डिंग खाते' खर्च हुए
१००१) सहायता में दिये श्री स्थानकवासी जैन लायब्रेरी श्रीनगर काश्मीर को
५१) श्रीमहावीर जैन लायब्रेरी श्रीरायसिंहनगर में दिये
१२८॥-)॥ विविध खुदरा सहायता में दिये
३४४६) विद्यालय में वेतन के
१७३५।)॥ बाल पाठशाला में
८८८।≈)। कन्या पाठशाला में
१२७५॥)॥। सेठिया नाइट कालेज
५५२॥)॥। हेड ऑफिस में खर्च हुए
७४७≈) सेठिया लायब्रेरी में पुस्तक व समाचारपत्र आदि में
७४॥) खर्च बिजली तथा पंखे का
१२६७) कर्मचारियों को महंगाई भत्ते के दिये
५०॥-) परचुरण खर्च
८४॥।) मकानों की मरम्मत में
७०७४-) कलकते के मकानों का ता० २१ सितम्बर १९४४ को नया डीड ऑफ ट्रस्ट बनवाया उसमें स्टाम्प, रजिस्ट्री व एटर्नी की फीस के खर्च हुए

संस्था की कलकत्ता स्थित स्थावर संपत्ति

का

नवीन ट्रस्ट नामा

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के संस्थापक महोदयों ने संस्था के स्थायित्व के लिये कलकते और बीकानेर में स्थावर सपत्ति प्रदान कर कलकत्ता और बीकानेर में उसकी लिखापढ़ी कर दी थी। कलकते की संपत्ति के अलग अलग तीन डीड्स आफ सेटलमेन्ट रजिस्टर्ड कराये गये थे। किन्तु उनमें कुछ कमी महसूस कर सस्थापक महोदयों ने उन्हें रद्द कर दिया एवं सस्था के स्थायित्व के लिये उनके बदले ता० २१ सितम्बर १९४४ तदनुसार मिति आसोज सुदी ६ स० २००१ शनिवार को नीचे लिखी सपत्ति का नया डीड ऑफ ट्रस्ट वनाकर उसकी सबरजिस्ट्रार कलकत्ता के दफ्तर में रजिस्ट्री करा दी। उक्त नवीन डीड आफ ट्रस्ट के अनुसार सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के वर्तमान में निम्नलिखित तीन ट्रस्टी है —

१ श्रीमान् दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया
२ „ बाबू जेठमलजी सेठिया
३ „ „ माणकचदजी सेठिया

उक्त डीड के अनुसार ट्रस्टियों की संख्या ६ तक हो सकेगी। ट्रस्ट कमेटी के अधीन सस्था की व्यवस्था के लिये जनरल कमेटी, प्रवन्धकारिणी कमेटी तथा आवश्यकतानुसार अन्य सब कमेटियां स्थापित की जायंगी एव यथासमय उनके लिये नियम उपनियम निर्धारित किये जायेंगे।

कलकत्ते की स्थायी संपत्ति

१. मकान न १६०-१६०।१ पुराना चीना बाजार

२ मकान न. ३,५,७,६,११ और १३ क्रोस स्ट्रीट (मूंगापट्टी) तथा न १२३ और १२५ मनोहरदास स्ट्रीट

३. मकान न ६ जेक्शनलेन तथा १११, ११२, ११३, ११४ और ११५ केनिंग स्ट्रीट का दो तिहाई हिस्सा

नोट—उक्त जेक्सनलेन और केनिंग स्ट्रीट का एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् बाबू जेठमलजी सा सेठिया ने सस्था को दिया वह नवीन ट्रस्ट डीड में है और एक तिहाई हिस्सा ता १६ ७-४० को संस्था ने खरीदा है। इस प्रकार इस मकान में संस्था का दो तिहाई हिस्सा है और एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् गोविन्दरामजी भीखणचन्दजी भनसाली का है।

कलकते की उक्त स्थावर सपत्ति के सिवा बीकानेर नगर में सस्था की नीचे लिखी स्थावर सपत्ति है—

बीकानेर की स्थावर संपत्ति

१--मोहल्ला मरोटियों का विशाल भवन (जिसमें आगे तीन मंजिला मकान है और पीछे की तरफ दो मंजिला मकान है) आगे पीछे के चौक, छप्परे और वाड़ा सहित। यह भवन कोटड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। यह मकान संस्था के संस्थापकोंने, संवर, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, दया करने और साधु साध्वियों के ठहरने के लिये (यदि वे ठहरना चाहें तो) तथा मुनि महाराज एवं महासतियों के व्याख्यान के लिये एवं इसी प्रकार के अन्य धार्मिक कार्यों के लिये दिया है। इसकी रजिस्ट्री सं. १६८० में ता ३० नवम्बर १६२३ को हुई। तभी से इस कोटड़ी की सारसंभाल संस्था कर रही है। संस्था ने इसकी मरम्मत कराई है, इसमें छप्पर वगैरह बनवाने में लागत लगाई है और संस्थापकों ने इस मकान का नया खत बीकानेर राज्य में श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मंजुआ १३-१२-३८ई० नाम तहसील मालमंडी नम्बर ३०३ है। इस खत के अनुसार इस मकान की कुल दरगज ३००५॥≈॥ है।

नोट—इस भवन में पहली मंजिल में दरवाजे के दोनों तरफ के दोनों दीवानखाने और उनके नीचे के दोनों तनवर संस्था में नहीं दिये हुए है। ये दोनों अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया के निजी है और इनका खत उनके नाम का अलग बना हुआ है। दीवानखानों की कुल दरगज २२८)॥ है। दीवानखानों के ऊपर की मंजिल संस्था की है।

२—मोहल्ला मरोटियों का दूसरा दो मंजिला विशाल भवन (चौक और वाड़ा सहित)। यह भवन सेठिया लायब्रेरी के नाम से प्रसिद्ध है। संस्थापक महोदयों ने यह भवन सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के लिये दिया है। अभी इस भवन में सेठिया ग्रन्थालय, कन्या-पाठशाला, बालपाठशाला, नाइट कॉलेज आदि संस्था के विभाग हैं। इसकी रजिस्ट्री बीकानेर में सं १६८० में ता २८ नवम्बर १६२३ को हुई। संस्थापकों ने इस मकान का नया खत बीकानेर राज्य से श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मंजुआ १३-१२-३८ ई नाम तहसील मालमंडी नम्बर ३०४ है। इस खत के अनुसार इस मकान की दरगज १३६३।≈॥ है। ता २८ नवम्बर १६२३ की रजिस्ट्री के बाद संस्था को प्राप्त जमीन तथा एक वाड़ा भी नये खत में शामिल है।

नोट—इस भवन में कन्यापाठशाला के वर्तमान मकान के नीचे का तहखाना (जिसकी दरगज १३६≈ है) तथा तीन वाड़ों में से दो वाड़े १६१॥≈ दरगज के संस्था में नहीं दिये हुए है। यह तहखाना तथा दोनों वाड़े अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया के निजी है। तहखाने और दोनों वाड़ों के दो खत उनके नाम अलग बने हुए हैं।

३—मकान एक उगूण दरवाजे का चौकी समेत, जिसकी दरगज ३३६।॥॥ है और जो ठ्ठारों की गली में वाके है, मोती, भोलु व गोलु ठठारा से स १९७९ माह वदी ६ ता १५ जनवरी सन् १९२०ई को खरीदा और उस पर लागत लगाकर दो मजिले आसरे इमारत बनवाये इसके बाद वि स २००१ मिति प्रथम चैतवदी ६ ता ५ मार्च १९४५ को संस्थापक महोदय ने संस्था के हक में दानपत्र लिख दिया और तहसील मालमडी में रजिस्ट्री करादी । संस्था के नाम इस मकान का पट्टा बनाने के लिये भी राज्य में दरखास्त कर दी गई है । इस मकान के आसे पासे इस प्रकार है— मकान में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर धन्ना ठठारा (फिलहाल जीवणजी महाराज) का घर है, बाँई ओर हजारी ठठारे का घर है, पीछे के तरफ आशुनाई का मकान है और सामने गली है ।

नोट-उक्त कलकत्ता एव बीकानेर दोनों जगह की स्थावर सपत्ति एक ही सस्था (सेठियाजैन पारमार्थिकसस्था) की है। अत. उनकी सुव्यवस्था क लिये यह आवश्यक है कि कलकते और बीकानेर की उक्त सपत्ति की देखभाल एक ही ट्रस्ट कमेटी के अधीन हो और एक से नियमों के अधीन उनका नियन्त्रण हो । अतएव सस्थापक महोदयों का विचार है कि कोटड़ी और सेठिया लायब्रेरी के मकान की, बीकानेर राज्य में कराई हुई ता २८व ३० नवम्बर१९२३ की रजिस्ट्रियों को अपने सुरक्षित अधिकार के अनुसार रद्दकर संस्था की बीकानेर की सपत्ति के नये ट्रस्टडीड बनाये जायें और उनकी बीकानेर राज्य में रजिस्ट्री करा दी जाय ।

सेठिया जैन ग्रन्थमाला का प्रकाशन

सेठिया जैन ग्रन्थमाला से श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठ भाग,सोलह सती, आर्हत प्रवचन, जैन सिद्धान्त कौमुदी, अर्द्धमागधी धातु रूपावली, कर्तव्यकौमुदी, सूक्ति-सग्रह,उपदेशशतक,सुखविपाक सार्थ,मागलिक स्तवन सग्रह प्रथम द्वितीय भाग, गुणविलास, गणधरवाद के तीन भाग, सक्षिप्त कानून सग्रह, प्रकरण थोकड़ा सग्रह, प्रस्तार रत्नावली, पचीस बोल का थोकड़ा,लघुदडक का थोकड़ा, सामायिक तथा प्रतिक्रमण सूत्र मूल और सार्थ इत्यादि कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित हुई है । विशेष विवरण के लिये सस्था का सूचीपत्र मगाकर देखिये । आर्डर आने पर पुस्तकें वी पी द्वारा भेजी जायँगी ।

पता:— अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था
बीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
अंत.	अंतगडदसा-अंतकृद्दशा सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार-अभयदेवसूरि वि स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अणु.	अणुत्तरोववाई-अनुत्तरोपपातिक सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार-अभयदेव सूरि वि स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अनु	अनुयोगद्वार सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार-मलधार गच्छीय श्री हेमचन्द्र सूरि	आगमोदय समिति वीर स २४५०
अभि. चि	अभिधान चिन्तामणि संस्कृत-कोष	श्री हेमचन्द्राचार्य वि. स ११४५-१२२९	लालचन्द्र नदलाल वकील, श्री मुक्तिकमल जैन मोहनमाला कोठीपोल, वड़ोदा, वीर स २४५१
अभि रा	अभिधान राजेन्द्र कोष (सात भाग) प्राकृत से संस्कृत	श्री विजय राजेन्द्र सूरि वि. स १८८३-१९६३	श्री जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस रतलाम, वीर स २४४०-२४५१
अर्द्ध मा	अर्द्धमागधी कोष (पाँच भाग) प्राकृत से हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज, वि स १९३६-९८ वैशाख	श्री श्वे स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स बम्बई, वीर स २४४९-२४६४

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
अष्टक प्रकरण, सस्कृत वृत्ति (वि. सं. १०८०)	हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी) वृत्तिकार-जिनेश्वरसूरि	श्री मनसुखभाई पोरवाड़, अहमदाबाद
आगमसार,मूल गुजराती, हिन्दी अनुवाद, वि स १७७६	श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज वि १८ वीं १६ वीं शताब्दी	श्री अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला, बड़ा उपाश्रय बीकानेर, वीर स २४४८
आचाराग सूत्र सटीक, मूल प्राकृत टीका सस्कृत वि सं ६३३	टीकाकार-शीलांकाचार्य	आगमोदय समिति, वीरस २४४२
आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक, प्राकृत,दश पइण्णा में दूसरी पइण्णा		आगमोदय समिति,वीर स २४५३
आलापपद्धति, सस्कृत	श्री देवसेनसूरि, वि १०वीं शताब्दी	माणिकचद दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला बम्बई, वीर स २४४६
आवश्यक सूत्र पूर्वभाग सटीक मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका सस्कृत	निर्युक्तिकार-भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार-मलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४५४
आवश्यक सूत्र पूर्व और उत्तर भाग सटीक मूल और नियुक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार-श्रीभद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार-हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४४३-२४४४

आ. ह. टि.	आवश्यक हरिभद्रीय टिप्पण, संस्कृत	मलधार गच्छीय श्री हेमचन्द्रसूरि	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं २४४६
आ. वि.	आध्यात्मिक विकासक्रम, गुजराती	पं सुखलालजी संघवी (विद्यमान)	एस जे शाह, मांदलपुर अहमदाबाद, वि. स. १९८५
उत्त.	उत्तराध्ययन सूत्र (दो विभाग) सटीक मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार-श्रीभद्रबाहुस्वामी टीकाकार श्री शान्त्याचार्य (११वीं शताब्दी)	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, वीर स २४४२
उत्त. (क)	उत्तराध्ययन सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, टीका संस्कृत वि स. १५४४ सर्वार्थ सिद्धि टीका	टीकाकार-श्रीकमल संयमोपाध्याय (सोलहवीं शताब्दी)	विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मंदिर बेलनगंज, आगरा वीर स २४४९-२४५१
उत्त (ह)	उत्तराध्ययन सूत्र हस्तलिखित		श्री सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर
उपा.	उपासकदशांग सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार-अभयदेवसूरि (वि स. १०७२, ११३५)	आगमोदय समिति वीर स. २४४६
उपा. (अं.)	उपासकदशांग सूत्र (अंग्रेजी अनुवाद)	अनुवादक-ए एफ. रुडोल्फ हार्नले	बिब्लोथिका इन्डिका कलकत्ता, सन् १८९० ई.
उपा ह	उपासकदशांग सूत्र हस्तलिखित		अनूप संस्कृत लायब्रेरी, (बीकानेर का प्राचीन पुस्तक भंडार) बीकानेर
उव.	उववाई (औपपातिक) सूत्र मूल प्राकृत, टीका, संस्कृत,	टीकाकार-अभयदेवसूरि (वि. स १०७२–११३५)	आगमोदय समिति, वीर सं २४४२
ऋषि	ऋषि मंडल वृत्ति मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत, अनुवाद-गुजराती	धर्मघोषसूरि, टीकाकार-शुभवर्द्धनगणी अनुवादक-शास्त्री हरिशंकर कालीदास	श्री जैन विद्याशाला डोशीवाड़ानी पोल अहमदाबाद, वि सं. १९५८

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
ओघनिर्युक्ति, मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुस्वामी (वीर. की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार श्री द्रोणाचार्य (ग्यारहवीं शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४४५
कर्त्तव्यकौमुदी दूसरा भाग संस्कृत, भाषानुवाद सहित (वि स १९८०)	शतावधानी श्री रत्नचंद्रजी स्वामी (वि स १९३६-१९९८ वैशाख)	श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५१
(१) कम्मपयडि (कर्म प्रकृति) सटीक,	मूल-शिवशर्माचार्य टीकाकार उपाध्याय श्रीयशोविजयजी	श्री जैन-धर्म प्रसारक सभा भावनगर वीर स २४४३
(२) कम्मपयडि; मलयगिरिकी टीका का गुजराती अनुवाद	अनुवादक पं. चदुलाल नानचद	श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मडल पादरा (गुजरात), वीर स १९७६
(१) कर्म ग्रन्थ भाग १-४ प्राकृत टीका-संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित	मूल और टीकाकार श्रीदेवेन्द्रसूरि (तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी)	श्रीआत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मडल रोशनमोहल्ला आगरा, वीर स २४४४-२४४८
(२) कर्म ग्रन्थ भाग ५-६ मूल प्राकृत-टीका संस्कृत	पाँचवें भाग के मूल और टीकाकार-श्रीदेवेन्द्रसूरि छठा भाग मूल-श्री चन्द्रर्षिमहत्तर, टीकाकार-मलयगिरि	आत्मानन्द सभा, भावनगर वीर स २४६६
कल्प सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, सुबोधिका टीका संस्कृत	मूल भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीका विनय विजयजी उपाध्याय (१७ वीं १८ वीं शताब्दी)	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड, बम्बई वीर स २४४६

कारण.	कारण सवाद, हिन्दी वीर स २४६५	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी (वि. स १९३६-१९९८ वैशाख)	हीरालाल सुगनचद जैन नया बाजार अजमेर वीर स २४६५
क्षेत्र.	क्षेत्रलोक प्रकाश, सस्कृत गुजराती अनुवाद सहित	उपाध्याय श्री विनयविजयजी [१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक-श्रावक हीरालाल हसराज	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४२
गच्छा.	गच्छाचार पयन्ना प्राकृत		आगमोदय समिति, वीर स २४५३
गीता	श्रीमद्भगवद्गीता [संस्कृत] साधारण भाषा टीका सहित		गीता प्रेस, गोरखपुर वि सं २००१
गुण	गुणस्थान क्रमारोह [सस्कृत का हिन्दी अनुवाद] वि सं १४४७	मूल-रत्नशेखरसूरि अनुवादक-श्री तिलकविजयजी पजाबी	आत्म तिलक ग्रन्थ सोसायटी रतनपोल, अहमदाबाद, वीर स २४४५
गुण. थो	चौदह गुणस्थान का थोकड़ा, हिन्दी		भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५५
गौ कु	गौतम कुलक-प्राकृत	गौतम मुनि	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, वीर सं २४५४
च.	चतुर्भावना पाठमाला मूल संस्कृत, व्याख्या-हिन्दी	मूल-शतावधानी श्रीरत्नचद्रजी स्वामी (वि स १९३६-१९९८ वैशाख) व्याख्या धर्मोपदेष्टा श्री फूलचंदजी महाराज	रत्नलाल अर्हद्दास जैन सोनीपत वीर सं २४५५
चन्दन	चन्दनबाला (सती वसुमती) हिन्दी	पूज्य श्रीजवाहरलालजी महाराज के व्याख्यान (वि स १९३२-२००० आषाढ शुक्ला ८)	श्री हितेच्छु श्रावक मडल रतलाम वीर स २४६२

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
चन्द्र.	चन्द्रप्रज्ञप्ति मूल-प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवादक मुनि श्री अमोलखऋषिजी महाराज (वि स १६३४-)	राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ, वीर स २४४५
छ	छन्दोमञ्जरी, सस्कृत टीका तथा अनुवाद सहित	वैद्य महामहोपाध्याय श्रीमद् गगादास; टीकाकार और अनुवादक } श्रीगुरुनाथ विद्यानिधि भट्टाचार्य	श्री जानकीनाथ काव्यतीर्थ, सस्कृत विद्यालय निवेदितालेन कलकत्ता, १३३२ वङ्गाब्द
ज	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (दो भाग) मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत (विक्रम स १६५०)	टीकाकार-उपाध्याय श्रीशान्तिचद्रगणी	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर सं २४४६
जी	जीवाजीवाभिगम सूत्र मूल-प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार- श्रीमलयगिरि	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४४५
जै	जैन तत्त्वादर्श, हिन्दी पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध	श्री विजयानन्दसूरीश्वर (श्री आत्मारामजी महाराज)	श्री आत्मानन्द जैन महासभा अम्बाला, वीर सं २४६२
जै ग्र	जैन ग्रन्थावली, हिन्दी		श्री श्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स बम्बई, वीर स २४५३
जै. प्र	जैन सिद्धान्त प्रवेशिका-हिन्दी	पं. गोपालदासजी बरैया	जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, वि. स १९८१
ज्ञा.	ज्ञाताधर्म कथा (णायाधम्मकहा) मूल-प्राकृत टीका सस्कृत (वि स ११२०)	टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि (वि स १०७२-११३५)	श्री आगमोदय समिति वीर स २४४५
ज्ञान.	ज्ञानार्णव, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	मूलकर्त्ता-श्रीशुभचन्द्राचार्य [नवीं शताब्दी] अनुवादक प पन्नालालजी बाकलीवाल	परमश्रुत प्रभावक मडल, बम्बई वीर सं.२४३३

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ठा.	ठाणाग सूत्र [स्थानाग सूत्र] दो भाग मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत वि स.११२०	टीकाकार श्री अभयदेवसूरि [वि स. १०७२-११३५]	आगमोदय समिति वीर सं २४४५-४६
तत्त्वार्थ	सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र, संस्कृत	वाचकमुख्य श्रीउमास्वाति	मोतीलाल लाधाजी पूना, वीर स २४५२
तत्त्वार्थ [सु]	तत्त्वार्थ सूत्र, गुजराती [दो भाग]	विवेचक-पं सुखलालजी [विद्यमान]	गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, वि सं १९८५
तन्दुल.	तन्दुलवेयालिय पइण्णा, प्राकृत (दस पइण्णा में से पाचवाँ पइण्णा)		देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स. २४५३
त्रिलोक.	त्रिलोकसार, प्राकृत, टीका सहित	श्री नेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती टीकाकार-श्री माधवचन्द्र	माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर स. २४४४
त्रि प	त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र गुजराती अनुवाद भाग ४	हेमचद्राचार्य [वि स ११४५-१२२९]	जैनधर्म प्रसारक सभा भावनगर
द.प	दस पइण्णा [प्रकीर्णक] प्राकृत		देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई
दश.	दशवैकालिक सूत्र, मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	मूलकर्त्ता-शय्यभवस्वामी [वीर की प्रथम शताब्दी] निर्युक्तिकार-भद्रबाहुस्वामी [वीर की पहली दूसरी शताब्दी] टीकाकार-हरिभद्रसूरि [छठी शताब्दी]	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर सं २४४४
दशा	दशाश्रुतस्कध दशा भाषान्तर सहित मूल प्राकृत	अनुवादक-उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज [विद्यमान]	जैन शास्त्रमाला कार्यालय, सैदमिट्ठा बाजार लाहोर, वीर स. २४६२

द्रव्य त.	द्रव्यानुयोग तर्कणा-सस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित	मुनि भोजसागरजी [सोलहवीं शताब्दी] अनुवादक-प ठाकुरदत्त शर्मा व्याकरणाचार्य	परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, वीर स २४३२
द्रव्यलो	द्रव्यलोक प्रकाश, सस्कृत गुजराती अनुवाद सहित	विनयविजयजीमहाराज(१७वीं १८वीं शताब्दी) अनुवादक–प हीरालाल हसराज	पं हीरालाल हसराज, जामनगर वीर स २४४५
द्रव्य स	द्रव्यसग्रह, प्राकृत, हिन्दी टीका सहित	श्री नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती हिन्दी टीकाकार-बाबू सूरजभानु वकील	श्री जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर स २४५३
ध.	धर्मसग्रह, सस्कृत[वि स १७३१]	उपाध्याय श्री मानविजयजी	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड, बम्बई वीर स २४५१
ध वि	धर्मविन्दुप्रकरण, सस्कृत	हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी) वृत्तिकार-मुनि चद्राचार्य (वि. १२वीं शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४५०
ध र	धर्मरत्नप्रकरण[वि स १२७१]	श्री शान्तिसूरि	आत्मानन्द जैन सभा भावनगर, वीर स २४५२
नं	नदीसूत्र सटीक मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत	देववाचक-क्षमाश्रमण [वीर की १० वीं शताब्दी] टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति, वि. स. १९८०
नय.	नयचक्र, प्राकृत	श्री देवसेनसूरि(वि दसवीं शताब्दी)	माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति बम्बई, वीर स. २४४६
नय प्र.	नयप्रदीप, सस्कृत	श्री यशोविजय गणी[१७वीं १८वीं शताब्दी]	आत्मवीर सभा भावनगर, वीर स २४४५
नयो.	नयोपदेश सस्कृत	श्रीयशोविजय गणी[१७वीं १८वीं शताब्दी]	आत्मवीर सभा भावनगर, वीर स. २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
नव	नवतत्त्व, मूल-प्राकृत हिन्दी भाषानुवाद सहित		श्री आत्मानद जैन पुस्तक प्रचारक मडल देहल वीर स. २४४२
नवपद.	नवपद प्रकरण वृहद्वृत्ति मूल-प्राकृत [वि स १०७३] टीका सस्कृत वि स ११६५]	मूलकर्त्ता-देवगुप्तसूरि टीकाकार-यशोदेव उपाध्याय	देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई वीर सं. २४५३
निर	निरयावलिकासूत्र, मूल-प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार—श्रीचन्द्रसूरि	आगमोदय समिति वीर सं २४४८
निशी	निशीथसूत्र, मूल प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवादक-श्रीअमोलखऋषिजी महाराज [वि सं १९३४—]	राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी महेन्द्रगढ़, वीर स २४४५
न्याय	न्यायसूत्र वात्स्यायनभाष्य तथा वृत्ति सहित सस्कृत	सूत्रकार-महर्षि गौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि वृत्तिकार-विश्वनाथ न्याय पचानन भट्टाचार्य	जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस बनारस, सन् १९२० ई
न्याय को	न्यायकोष, सस्कृत	महामहोपाध्याय भीमाचार्य	गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुकडिपो बम्बई, सन् १८९३ ई.
न्याय द	न्यायदर्शनम् (न्यायसूत्रम्) संस्कृतभाष्य तथा वृत्तिसहित	सूत्रकार-महर्षि गौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि वृत्तिकार-विश्वनाथ न्याय पंचानन भट्टाचार्य.	जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस बनारस, सन् १९२० ई.
न्याय दी.	न्यायदीपिका, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	श्रीधर्मभूषण यति (सन् १६००ई) अनुवादक—पं खूबचद्रजी	श्रीजैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, वीर सं. २४३६

न्यायप्रदीप, हिन्दी	साहित्यरत्न दरबारीलाल न्यायतीर्थ(विद्यमान)	साहित्यरत्न कार्यालय जुबिलीबाग तारदेव बम्बई, वि स १९८६
पन्नवणा (प्रज्ञापना) मूल-प्राकृत-टीका सस्कृत	टीकाकार—आचार्य श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर सं २४४४
पंचसग्रह (चार भाग) मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत	मूलकर्त्ता-श्रीचन्द्रर्षि महत्तर टीकाकार-आचार्य श्री मलयगिरि	श्रावक हीरालाल हसराज जामनगर, वि स १९६६
पच प्रतिक्रमण		श्री जैन श्वेताम्बर मित्र मडल लायब्रेरी, घी वालों का रास्ता जयपुर, वीर स २४५८
पच वस्तुक स्वोपज्ञवृत्ति सस्कृत, मूल-प्राकृत	श्रीहरिभद्रसूरि [वि छठी शताब्दी]	देवचद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४५३
पचाशक, मूल प्राकृत, टीका-सस्कृत	श्री हरिभद्रसूरि [वि छठी शताब्दी] टीका-श्रीअभयदेवसूरि [वि १०७२—११३५]	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर स २४३९
पच्चीस बोल का थोकड़ा		श्रीभैरोंदान जेठमल सेठिया बीकानेर, वीरस. २४६१
परमात्म प्रकाश, मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत भाषा अनुवाद सहित	मूलकार-योगीन्द्रदेव, टीकाकार-ब्रह्मदेव[सोलहवीं शताब्दी] भाषा टीकाकार—पडित दौलतरामजी	श्री परमश्रुतप्रभावक मडल झवेरी बाजार बम्बई, वीर स. २४४२
पिंगलसूत्र(पिगलच्छन्द सूत्रम्)सस्कृत(पचमावृत्ति)	श्री पिंगलाचार्य	श्री जानकीनाथ शर्मा सस्कृत विद्यालय निवेदिता लेन कलकत्ता

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
पिं नि.	पिण्डनिर्युक्ति, मूल प्राकृत, टीका-संस्कृत	श्री भद्रबाहुस्वामी टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	श्री देवचद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फण्ड बम्बई, वीर स २४४४
पिं वि.	पिण्डविशुद्धि, मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत [वि स ११७८]	मूल श्रीजिनवल्लभसूरि टीकाकार-श्रीचन्द्रसूरि	आचार्य श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी जैन ग्रन्थमाला सूरत, वीर स २४६५
पी प	पीस एण्ड परसनेलिटी	प्रोफेसर जगदीश मित्र	लाहोर
पुरुषा.	पुरुषार्थ दिग्दर्शन (हिन्दी)	श्रीविजय धर्मसूरि	अनोपचद नरसिंहदास, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला हेरिसरोड भावनगर, सन् १९२२ ई
प्र.	प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार, संस्कृत रत्नाकरावतारिका टीका सहित	श्रीवादिदेवसूरि (वि स ११४३-१२२६) टीकाकार-रत्नप्रभसूरि (वि १३ वीं शताब्दी)	हर्षचन्द्र भूराभाई धर्माभ्युदय प्रेस बनारस, वीर सं २४३७
प्रतिमा.	प्रतिमाशतक लघुवृत्ति सहित मूल प्राकृत	न्यायविशारद न्यायाचार्य श्रीयशोविजयजी (वि १७वीं १८वीं शताब्दी), वृत्तिकार-श्रीभावसूरि	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर, वीर स २४४१
प्र मी.	प्रमाणमीमांसा, संस्कृत स्वोपज्ञ वृत्ति सहित	श्री हेमचन्द्राचार्य [वि स ११४५-१२२९]	मोतीलाल लाधाजी १९६ भवानीपेठ पूना, वीर सं २४५२
प्र र	प्रकरण रत्नाकर (चार भाग) संस्कृत, प्राकृत तथा भाषा के अनेक ग्रन्थो का संग्रह		भीमशी माणेक बम्बई [वि स १९३२ १९६८]

प्रव	प्रवचन सारोद्धार, मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत(वि स.१२४८)	मूलकर्त्ता-श्रीनेमिचद्रसूरी(वि बारहवीं शताब्दी) टीकाकार-सिद्धसेनसूरीश्वर(वि तेरहवीं शताब्दी)	श्रीदेवचद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४४८
प्रशस्त	प्रशस्तपाद भाष्य		
प्रश्न	प्रश्नव्याकरण सूत्र,मूल प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि (वि स १०७२—११३५)	आगमोदय समिति, वीर स २४४५
प्रश्नो	प्रश्नोत्तर सार्धशतक (वि स १८५१)	उपाध्याय श्री क्षमाकल्याण गणी	सेठ फकीरचन्द घेलाभाई सूरत, (वि स १६७३)
प्र स.	प्रकरण सग्रह दूसरा भाग हिन्दी (२७ थोकडों का सग्रह)	सग्रहकार-मुनि श्रीउत्तमचद्रजी स्वामी (वि स १६१०-१६७६)	सेठ भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर स २४५०
प्रा	प्राकृत व्याकरण,सस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य (वि सं. ११४५-१२२६)	श्री मोतीलाल लाधाजी १९६ भवानी पेठ पूना, सन् १६२८ई.
बृ	बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्तिभाष्य वृत्ति सहित,मूल, निर्युक्ति और भाष्य प्राकृत, वृत्ति-सस्कृत [पाच भाग प्रकाशित]	मूल एव निर्युक्तिकर्त्ता-भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी), भाष्यकार-सघदास गणी क्षमाश्रमण,वृत्तिकार-मलयगिरि तथा क्षेमकीर्ति आचार्य,सम्पादक मुनि चतुरविजयजी पुण्यविजयजी	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर, वीर स २४५९-२४६५
बृ (जी)	श्रीबृहत्कल्प सूत्र,मूल-प्राकृत गुजराती शब्दार्थ भावार्थ सहित	भाषाकर्त्ता- डा जीवराज घेलाभाई दोशी.	डा जीवराज घेलाभाई दोशी अहमदाबाद, वि स १६७१
बृ हो.	बृहत्होड़ा चक्र		गर्ग एन्ड कम्पनी खारी बावली देहली

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ब्रह्म.	ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य, भामती, वेदान्त कल्पतरु और कल्पतरु परिमल सहित, संस्कृत	भाष्यकार-श्रीशंकराचार्य, भामतीटीका-वाचस्पतिमिश्र वेदान्त कल्पतरु-श्री अमलानन्द सरस्वती कल्पतरु परिमल श्री अप्पय दीक्षित	तुकाराम जावजी सेठ बम्बई, सन् १९१७ ई
भ	भगवती (व्याख्याप्रज्ञप्ति) सूत्र सटीक, मूल प्राकृत-टीका संस्कृत (वि स ११२८) भाग ३	टीकाकार-श्रीअभयदेवसूरि (वि स १०७२-११३५)	श्री आगमोदय समिति, वीर सं २४४४-२४४७
भरत	भरतेश्वरबाहुबलि वृत्ति (दो भाग) मूल-प्राकृत, वृत्ति-संस्कृत	वृत्तिकार शुभशील गणी (१५वीं १६ वीं शताब्दी)	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं. २४५८-२४६२
भावना	भावनाशतक, मूल भावार्थ और विवेचन सहित, मूल-संस्कृत भावार्थ और विवेचन-गुजराती	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज [वि.स १९३६-१९९८]	वृन्दावनदास दयाल कोट बाजार गेट बम्बई, वीर सं २४४७
यो	योगशास्त्र स्वोपज्ञ विवरण सहित, संस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य (वि स ११४५-१२२९)	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर सं २४५२
योग	योगदर्शन, संस्कृत, भाष्य तथा व्याख्या सहित	सूत्रकार-महामुनि पातञ्जलि, भाष्यकार-महर्षि कृष्ण द्वैपायन, व्याख्याकार-श्रीमद् वाचस्पति मिश्र	एच डी गुप्ता एन्ड सन्स, चौखम्बा संस्कृत बुकडिपो बनारस, सन् १९११ ई
रत्ना	रत्नाकरावतारिका (प्रमाणनय तत्त्वालोकालंकारकी टीका) संस्कृत	श्री रत्नप्रभसूरि (वि तेरहवीं शताब्दी)	हर्षचन्द्र भूराभाई धर्माभ्युदय प्रेस बनारस, वीर सं. २४३७

रा	राजप्रश्नीय सूत्र सटीक मूल-प्राकृत,टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४५१
राज.	सती राजमती,हिन्दी	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के व्याख्यानों में से	श्री हितेच्छु श्रावक मडल रतलाम, वीर स २४६३
रा यो	राजयोग, गुजराती (दो भाग)	स्वामी विवेकानन्द (सन् १८६३–१९०२ ई)	डाह्याभाई रामचन्द्र महेता अहमदाबाद, सन् १९२१ ई
लोक	लोक प्रकाश,संस्कृत गुजराती अनुवाद	उपाध्याय विनयविजयजी[१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक श्रावक हीरालाल हंसराज	प श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर, वि स १९६७
वि	विपाकसूत्र सटीक मूल-प्राकृत,टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्रीअभयदेवसूरि [वि स १०७२–११३५]	आगमोदय समिति वीर स २४४६
विशे	विशेषावश्यक भाष्य,प्राकृत टीका-संस्कृत,(वि स ११७५)	भाष्यकर्ता श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण टीकाकार-मलधारि श्रीहेमचन्द्रसूरि	हर्षचंद्र भूराभाई बनारस, वीर स. २४४१
विहर	विहरमान एकविंशति		
वेदान्त	वेदान्त परिभाषा		
व्यव	व्यवहार सूत्र,मूल-प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	हिन्दी अनुवादक-श्रीअमोलखऋषिजी (वि स १९३४–)	राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ़, वीर स. २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
व्यव. चू.	व्यवहार चूलिका (हस्तलिखित) टब्बार्थ (वि स.१६४४ पौष सुदी १५ शनिवार की लिखी हुई)		श्री सेठिया जैन शास्त्र भडार बीकानेर
व्यव. भा.	व्यवहार भाष्य निर्युक्ति विवरण सहित, मुल, निर्युक्ति और भाष्य-प्राकृत, टीका-संस्कृत (दस भाग)	निर्युक्तिकार श्रीभद्रबाहुस्वामी टीकाकार-श्रीमलयगिरि	वकील केशवलाल प्रेमचंद अहमदाबाद, वि स १९८२-८४
शा.	शान्तसुधारस, प्रथम द्वितीय भाग मूल-सस्कृत, विवेचन गुजराती [वि स १७२३]	मूलकर्त्ता-उपाध्याय श्रीविनयविजयजी विवेचक-मोतीचद गिरधरलाल कापडिया	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वि स.१९६४-६५
शास्त्र	शास्त्र दीपिका, व्याख्या सहित सस्कृत	सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्रीमत्पार्थ सारथि मिश्र व्याख्याकार-श्री रामकृष्ण, श्रीसोमनाथ	तुकाराम जावजी मिश्र निर्णयसागर प्रेस २३ कोल भाट लेन बम्बई, सन् १९१५ ई.
शिक्षा.	श्रावक के चार शिक्षाव्रत	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के व्याख्यानों के आधार पर	श्री हितेच्छु श्रावक मंडल रतलाम, वीर स २४४३
श्राद्ध.	श्राद्धविधि प्रकरण स्वोपज्ञवृत्ति युक्त [वि स.१५०६]	श्री रत्नशेखरसूरि (वि स. १४५७-१५१७)	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४३
श्राद्ध प्रति.	श्राद्ध प्रतिक्रमण (वन्दित्तु सूत्र) मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्री रत्नशेखरसूरि (वि. स १४५७-१५१७)	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड झवेरी बाजार बम्बई, वीर स २४४५

श्रा. प्र.	श्रावक प्रज्ञप्ति, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत	मूलकर्त्ता—वाचकमुख्य श्रीउमास्वाति टीकाकार-श्रीहरिभद्रसूरि [छठी शताब्दी]	ज्ञान प्रसारक मंडल बम्बई, वि.स.१९६१
श्रा प्रति	श्रावक प्रतिक्रमण[हिन्दी और प्राकृत]	"	श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर स २४६५
षड्भाषा. संगीत.	षड्भाषाचन्द्रिका,संस्कृत संगीतशास्त्र	प लक्ष्मीधर	राजकीय ग्रन्थमाला बम्बई, सन् १९१६ ई.
सप्त.	सप्तभगीतरंगिणी, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	मूलकर्त्ता-श्री विमलदास अनुवादक—ठाकुरप्रसाद शर्मा	श्री परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, वीर सं २४४२
सम	समवायाग सूत्र सटीक,मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत [वि.स. ११२०]	टीकाकार श्रीअभयदेवसूरि (वि स. १०७२-११३५)	आगमोदय समिति, वीर स. २४४४
समय.	समयसार,आत्मख्याति टीका तथा गुजराती अनुवाद सहित	श्री कुन्दकुन्दाचार्य [वि पहली शताब्दी] टीकाकार-अमृतचन्द्राचार्य(वि.१०वीं शताब्दी) अनुवादक—हिम्मतलाल जेठालाल शाह	श्री जैन अतिथि सेवा समिति सोनगढ काठियावाड़, [वि. सं १९९७]
सम्मति.	सम्मति तर्क प्रकरण,मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत [पांच भाग]	मूलकर्त्ता-आचार्य श्रीसिद्धसेन दिवाकर[पहली शताब्दी] टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि सम्पादक-प. सुखलाल बेचरदास (विद्यमान)	गुजरात पुरातत्त्व मंदिर अहमदाबाद, वि. स. १९८०
सरल पिं	सरल पिंगल, हिन्दी वि. स १९७४	श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी, विशारद, श्री लक्ष्मीधर शुक्ल, विशारद	हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, वि सं. १९८४

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
सर्व द	सर्व दर्शन सग्रह, सस्कृत	श्री माधवाचार्य	जीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य कलकत्ता, सन् १८८६ ई
स. श.	सप्ततिशत स्थान प्रकरण [सत्तरिसय ठाणावृत्ति] मूल-प्राकृत (वि स १३८७) टीका-सस्कृत (वि स १६७०)	मूलकर्त्ता श्री सोमतिलकसूरि टीकाकार-श्री देवविजय	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर वीर स. २४४५
सांख्य.	सांख्यतत्त्व कौमुदी, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	श्री ईश्वरकृष्ण	नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, सन् १८८८ ई
साधु प्र.	साधु प्रतिक्रमण सूत्र		श्री भैरोदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर सं. २४४६
सि	सिद्धान्त कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित	तुकाराम जावजी बम्बई
सि. मु.	सिद्धान्त मुक्तावलि	श्री विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य	पाण्डुरग जावजी निर्णयसागर प्रेस कोलभाट लेन बम्बई, सन् १२६४ ई.
सूय.	सूयगडाग(सूत्रकृताग)सूत्र, मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत वि सं. ६३३	टीकाकार-श्री शीलाकाचार्य (वि दसवीं शताब्दी)	श्री आगमोदय समिति, वीर स २४४३
सूर्य.	सूर्यप्रज्ञप्ति सटीक, मूल-प्राकृत टीका-सस्कृत	टीकाकार-आचार्य श्री मलयगिरि	श्री आगमोदय समिति, वीर स. २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
सेन.	सेनप्रश्न (प्रश्नरत्नाकराभिध. श्री सेन प्रश्न) सस्कृत (वि. १७ वीं शताब्दी)	सग्रहकर्त्ता-श्रीशुभविजय गणी (विजयसेन सूरि को पूछे हुए प्रश्नों के उत्तरों का सग्रह)	श्रीदेवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४४५
स्या	स्याद्वादमञ्जरी, सस्कृत (वि स १३४६)	श्री मल्लिसेनसूरि	श्री मोतीलाल लाधाजी १६१ भवानी पेठ पूना, वीर स २४५२
हठ	हठयोगदीपिका, गुजराती	मूल-स्वात्माराम योगीन्द्र, भाषाटीका-वेदान्त कवि हीरालाल जादवराय बुच	महादेव रामचद्र जागुष्टे बुकसेलर नया दरवाजा अहमदाबा वि स १६७१
हि. फि.	(हिस्ट्री ऑफ) इडियन फिलॉसोफी, दो भाग, अग्रेजी	डा एस राधाकृष्णन	मेक्मिलिन कम्पनी, सन् १६३१ ई
हीर	हीर प्रश्न (प्रश्नोत्तर समुच्चय) सस्कृत	सग्रहकर्त्ता-कीर्तिविजय गणी (वि १७वीं शताब्दी) (श्री हीरविजयसूरि को पूछे गये प्रश्नों के उत्तरो का सग्रह)	जेसंगलाल छोटालाल सुतरीया अहमदाबाद, (श्रीहसविजय जैन लायब्रेरी) वीर स २४४६

अध्ययनादि के संकेत

संकेत	पूरा नाम	किस किस ग्रन्थ में है:—
अ०	अध्ययन	आवश्यक, आचारांग, उत्तराध्ययन, उपासकदशा, ज्ञाताधर्मकथा, दशवैकालिक, विपाकसूत्र, सूयगडांग, अन्तगडदशासूत्र, अणुत्तरोववाई आदि
अधि	अधिकार	धर्मसंग्रह
अध्या	अध्याय	तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यानुयोग तर्कणा
आ.	आह्निक	प्रमाणमीमांसा, न्यायसूत्र
उ.	उद्देशा	सूयगडांग, भगवती, निशीथसूत्र, बृहत्कल्पसूत्र, व्यवहारसूत्र, ठाणांगसूत्र, आचारांग सूत्र
उल्ला	उल्लास	सेनप्रश्न
का.	कारिका	स्याद्वादमञ्जरी
काड.	काण्ड	सम्मति तर्क
गा.	गाथा	आगमों में तथा व्यवहारभाष्य, विशेषावश्यकभाष्य हरिभद्रीयावश्यक, मलयगिरि आवश्यक, परमात्मप्रकाश
चू	चूलिका	आचारांगसूत्र, दशवैकालिकसूत्र
टी.	टीका	
द.	दशा	दशाश्रुतस्कन्धदशा
द्वा.	द्वार	प्रवचनसारोद्धार पंचसंग्रह, पंचवस्तुक, प्रश्नव्याकरणसूत्र (आश्रवद्वार और संवरद्वार), नवपद प्रकरण

नि.	निर्युक्ति	आचारांग, सूयगडाग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक, व्यवहारसूत्र, ओघनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति
प	पद	पन्नवणासूत्र
पर्व.	पर्व	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र
परि.	परिच्छेद	रत्नाकरावतारिका
प्रक.	प्रकरण	ज्ञानार्णव
प्रका.	प्रकाश	योगशास्त्र, हीरप्रश्न, श्राद्धविधिप्रकरण
प्रति.	प्रतिपत्ति	जीवाजीवाभिगम
प्रा.	प्राभृत	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
प्रा. प्रा.	प्राभृतप्राभृत	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
भा.	भाग	कर्मग्रन्थ, कर्तव्यकौमुदी
व.	वर्ग	निरयावलिका, अणुत्तरोववाई, अन्तगडदशा
वक्ष.	वक्षस्कार	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
विव.	विवरण	पंचाशक
श.	शतक	भगवती
श्लो.	श्लोक	
श्रु.	श्रुतस्कन्ध	आचारागसूत्र, सूयगडागसूत्र
स.	सर्ग	
सू.	सूत्र	ठाणांगसूत्र, समवायांगसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र, रत्नाकरावतारिका

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह

आठवाँ भाग

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों का विषय कोष

मंगलाचरण

आसाढे धवलाइ छट्ठि चवणं चित्तस्स तेरस्सिए ।
सुद्धाए जणणं सुकिण्ह दसमी, दिक्खा य मग्गस्सिरे ॥
जस्सासी वइसाह सुद्ध दसमी, णाणं जणाणंदणं ।
मुक्खो कत्ति अमावसाइ तमहं, वंदामि वीरं जिणं ॥

भावार्थ–आषाढ़ सुदी छठ को देवलोक से चव कर चैत सुदी त्रयोदशी को जिसने जन्म धारण किया, मगसिर वदी दशमी को जिसने लोक-कल्याण के लिये दीक्षा अङ्गीकार की, वैशाख सुदी दशमी को जिसे लोक को आनन्द देने वाला पूर्ण ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ एवं अन्त में कार्तिक मास की अमावस्या के दिन जिस का निर्वाण हुआ ऐसे श्री वीर भगवान् को मैं वन्दना करता हूँ ।

१ श्रुतज्ञान का भेद। २ आहार का दोष। ३ शरीर को न खुजलाने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ अकर्मांशस्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५ उ ३ सू ४४५, भ श २५ उ ६ सू ७५१
२ अकस्माद्भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम ७
अकाममरण	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २
अकाममरणीय अध्ययन की बत्तीस गाथाएं	९७२	७	४६	उत्त अ. ५
अकारण दोष (आहार का दोष)	३३०	१	३४०	उत्त अ २४ गा १२ टी, उत्त अ २६ गा ३२, ध अधि. ३ श्लो २२ टी., पि नि गा. ६६१ से ६६८
अकाल (काल का भेद)	४३१	२	३८	विशे. गा २७०८ से २७१०
अकिंचनत्व (परिग्रह त्याग	६६१	३	२३४	नव. गा. २३, सम. १०, शा. भा. १ प्रक ८ (संवरभावना)
३ अकृत्स्ना आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा. ५ उ. २ सू ४३३, सम २८
अक्रियावादी आठ	५९१	३	९०	ठा. ८ उ. ३ सू ६०७
अक्रियावादी की व्याख्या और उसके चौरासी भेद	१९१	१	१४५	भ.श ३० उ. १ सू. ८२४ टी, आचा अ. १ उ. १ सू० ३ टी, सूय० अ० १२
अक्षर का क्या अर्थ है?	९१८	६	१३८	वृ गा. ७२ से ७५, न. सू० १, ४३ टी. पृ. ६३, २०१
अक्षर श्रुत	८२२	५	३	न सू० ३९, विशे० गा० ४५५-५००, कर्म भा. १ गा ६
अक्षर श्रुत	९०१	६	३	कर्म भा. १ गा० ७

१ निर्ग्रन्थ का भेद। २ यकायक होने वाला भय। ३ प्रायश्चित्त विशेष।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अक्षरश्रुत के तीन भेद	८२२	५	६	न सू. ३६, विशे.गा ४६४-४६६, कर्म भा १ गा !
अक्षरसमास श्रुत	६०१	६	३	कर्म० भा० १ गा० ७
अक्षीण महानसी लब्धि	६५४	६	२६७	प्रव० द्वा० २७० गा १४६४
१ अगमिक श्रुत	८२२	५	१०	न. सू. ४४, विशे.गा ५४६
अगार चारित्र धर्म	२०	१	१५	ठा० २ उ० १ सू० ७२
अगुरुलघुत्वगुण	४२५	२	१६,२४	आगम. द्रव्य. त.मध्या ११ श्लो. ४
२ अगुरुलघु परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प १३ सू १८४
अग्निकुमार देवों के दस अधिपति	७३५	३	४१८	भ श ३ उ८ सू १६६
अग्निभूति गणधर की कर्म विषयक शंका समाधान	७७५	४	३१	विशे गा १६०६ १६४४
३ अग्रवीज	४६६	२	६६	दश० अ० ४ सू.१
अघाती कर्म	२७	१	१६	कम्म. गा. १ टी. पृ १०
अघाती प्रकृतियाँ	८०६	४	३५०	कर्म० भा० ५ गा० १४
अचक्षुदर्शन	१६६	१	१५७	ठा० ४ उ० ४ सू० ३६५, कर्म० भा० ४ गा० १२
अचक्षुदर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४	२६६	पन्न० प० २६ सू० ३१२
४ अचरम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५	ठा० ५ उ० ३ सू० ४४५

१ श्रुतज्ञान का भेद। २ अजीवपरिणाम का भेद। ३ बादर वनस्पतिकाय का भेद। ४ निर्ग्रन्थ का भेद।

१ संयम की घात करने वाला एक दोष। २ साधु के कल्प का एक भेद।

३ स्नातक निर्ग्रन्थ का एक भेद।

[1] अज्ञात घरों में गोचरी करने वाला साधु।

१ रोगी साधु की सेवा करने वाला साधु।

२ द्रव्यानुयोग का भेद-वस्तु के अयथार्थ स्वरूप का व्याख्यान।

१. अतिथिदान की प्रशंसा करके भिक्षा चाहने वाला

१ आहार का दोष २. श्रुतज्ञान का एक भेद ३ वह ज्ञान, जिसमें वस्तु के स्वरूप का निश्चय नहीं होता।

१. आगम का एक भेद

[1] आहार का एक दोष। [2] ज्ञानाचार का भेद। [3] सैनिक देव अथवा सेनानायक देव।

१ सीखे हुए सूत्रार्थ का बार बार मनन करना।

१ अभिग्रह विशेष धारण करने वाला मुनि।

१ ज्ञान दर्शन चारित्र की विराधना न करना। २ जीव का परिणाम विशेष।

१ ठण्ड और गर्मी के परिषह को सहन करने वाला अभिग्रह धारी साधु ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अव्यक्त दृष्टि नामक तीसरे निह्नव का मत	५६१	२	३५६	विशे, गा २३५६-२३८८
अव्यक्त स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४५	भग १६ उ६ सू ५७७
अव्यवस्था दोष	५६४	३	१०४	प्र मी अध्या,१ आ.१ सू ३३
अव्यवहार राशि	६	१	८	आगम०
अव्यवहार राशि	४२५	२	२१	आगम०
अव्याप्ति	१२०	१	८४	न्याय दी प्रका १
अव्याप्ति दोष	७२२	३	४०८	ठा. १०उ.३ सू ७४३ टी
अशक्य बोल छः	४६०	२	१०१	ठा ६ उ ३ सू. ४७६
अशबल स्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५ उ ३ सू ४४५, भ श २५ उ.६ सू. ७५१
'अशरण' पर दस गाथाएं	६६४	७	२२२	
अशरण भावना	८१२	४	३५८, ३७६	शा भा १प्रक २, भावना.,ज्ञान. प्रक २,प्रव.द्वा.६७ गा.५७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू.७
अशुचि भावना	८१२	४	३६५, ३८४	शा.भा १प्रक.६,भावना.,ज्ञान; प्रक.२,प्रव०द्वा ६७गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू.७
अशुभ दीर्घायु के ३ कारण	१०६	१	७४	ठा० ३ उ० १ सू० १२५
अशुभ नाम कर्म चौदह प्रकार से भोगा जाता है	८३६	५	३३	पन्न प. २३ सू २९२
अशुभ भावना पाँच	४०१	१	४२८	प्रव. द्वा ७३ गा. ६४१, उत्त. अ ३६ गा. २६१-२६४
१ अश्लोक भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४९, मम.

१ अपकीर्ति का भय ।

[1] एक समय में उत्कृष्ट अवगाहना वाले १०८ जीवों का सिद्ध होना।

१ शरीर और उपकरण की विभूषा करने वाला साधु।

आ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ कर्म	५९०	३	४३	विशे गा १६०६-१६४४, तत्त्वार्थ अध्या ८,कर्म भा.१, भ श ८ उ ६ सू ३५१,भ श १ उ ४,उत्त अ ३३, पन्न प २३, द्रव्य लो.स १०
आठ कर्मों का क्षय करने वाले महात्मा यहाँ की स्थिति पूरी करके कहाँ उत्पन्न होते हैं?	९८३	७	११७	उव सू ४१
आठ कर्मों की स्थिति	५९०	३	४३-६०	पन्न प २३ सू २९४,तत्त्वार्थ अध्या ८सू १४से२१,उत्त अ.३३
आठ कर्मों के अनुभाव	५९०	३	४३-६०	पन्न प २३ सू २९२
आठ कर्मों के बन्ध के कारण	५९०	३	४३-६०	भ०श०८ उ०९ सू० ३५१
आठ कर्मों के भेद प्रभेद	५९०	३	४३-६०	पन्न०प २३ सू २९३,उत्त अ.३३ कर्म भा १,तत्त्वार्थ अध्या ८सू ५-१४
आठ कारण झूठ बोलने के	५८२	३	३७	साधु प्र महाव्रत २
आठ कृष्ण राजि	६१६	३	१३३	ठा ८ उ ३सू ६२३,भ.श.६ उ ५ सू २४२,प्रव द्वा २६७ गा १४४१ से १४४४
आठ गण	५९६	३	१०८	पिंगल, छं.
*आठ गणधर पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८ उ ३ सू. ६१७,सम.८

* ठाणांग सूत्र एवं समवायांग सूत्र के मूल पाठ में भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गणधर बतलाये हैं किन्तु हरिभद्रीयावश्यक गाथा २६६ से २६९ में, प्रवचन सारोद्धार द्वार १५ में तथा सप्ततिशय ठाणा वृत्ति द्वार १११ में भगवान् पार्श्वनाथ के दस गणधर होना बतलाया है। ठाणांग और समवायांग के टीकाकार श्री अभयदेवसूरि ने भी टीका में दस गणधर का होना माना है। मूल पाठ में दी हुई आठ की संख्या का सामंजस्य करने के लिये उन्होंने टीका में यह खुलासा किया है कि अल्प आयु होने के कारण सूत्रकार ने दो गणधरों की विवक्षा न कर आठ ही गणधर बतलाये हैं।

[1] धर्म प्रचार में सहायक होने वाला।

१ आगम का एक भेद।

[1] धन की रक्षा के लिए चोर आदि से डरना।

१ दास के समान सेवा करने वाले देव। २ शरीर और उपकरणों की विभूषा करने वाला साधु। ३ उत्सर्ग और अपवाद रूप आम्नाय का अर्थ कहने वाला आचार्य। ४ दंडे सरीखा लम्बा आकार

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आवश्यक के दस नाम	६८७	३	३५०	विशे.गा.८७२-८७६.अनु सू २८
आवश्यिकी(आवस्सिया) समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५उ ७सू ८०१,ठा १० उ ३ सू ७४६, उत्त अ २६ गा २,प्रव द्वा १०१ गा ७६०
आविर्भाव	४४	१	२७	न्याय को.
आवीचि मरण	८७६	५	३८२	सम.१७,प्रव.द्वा १५७गा १००६
आशंसा प्रयोग दस	६६७	३	२५३	ठा १० उ ३ सू ७५६
आशातनाएं तेतीस	६७५	७	६१	सम ३३,दशा द ३,आव ह अ ४ पृ ७२८
आशीविष लब्धि	६५४	६	२६३	प्रव द्वा २७० गा १४६३
आश्चर्य (अच्छेरा) दस	६८१	३	२७६	ठा १० उ ३. सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८५-८८६
आस्रव और संवर	४६७	२	२०५	
आश्रव के बयालीस भेद	६६२	७	१४६	नव गा १६
आश्रव के बीस भेद	६०७	६	२५	सम ५,प्रश्न. नि गा २ पृ ३, ठा ५ उ २ सू ४१८,४२७, ठा १० उ ३ सू. ७०६
आश्रव, क्रिया, वेदना और निर्जरा के १६ भांगे	८६८	५	१६८	भ श १६ उ.४ सू. ६५८
आश्रव तत्त्व के बीस और बयालीस भेद	६२३	३	१८३	नव.गा.१६,सम.५,प्रश्न नि गा २ पृ ३टी.,ठा ५उ २सू ४१८,४२७ ठा.१० उ.३ सू ७०६
आश्रव द्वार प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा.५ उ ३ सू. ४६७, आव ह अ ४गा १२५०-१२५१
आश्रव पाँच	२८६	१	२६८	ठा.५ उ.२ सू ४१८, सम. ५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
इक्कीस गाथा दशवैकालिक के सभिक्खु अध्ययन की	९१६	६	१२६	दश अ. १०
इक्कीस गुण श्रावक के	९११	६	६१	प्रव द्वा २३९गा १३५६-५८, ध अधि १ श्लो.२० पृ २८ नं सू.२७ गा.७१-७४टी,
इक्कीस दृष्टान्त पारिणामिकी बुद्धि के	९१५	६	७३	आव ह गा ९४८ से ९५१
इक्कीस प्रकार का धोवण पानी	९१२	६	६३	आचा श्रु २ अ १ उ. ७ ८ सू.४१,४३, पिं नि गा १८-२१, दश अ.५ उ.१ गा. ७५-७६
इक्कीस प्रश्नोत्तर	९१८	६	१३३	
इक्कीस शबल दोष	९१३	६	६८	दशा द २, सम २१
इक्कीस श्रावक के गुण	९११	६	६१	प्रव द्वा.२३९गा १३५६-५८, ध अधि १ श्लो.२० पृ २८
इच्छाकार समाचारी	६६४	३	२४९	भ श २५उ ७सू ८०१, ठा १० उ ३सू ७४९, उत्त अ २६ गा ३ प्रव. द्वा १०१गा ७६०
इच्छापरिमाण व्रत	३००	१	२९०	आव ह अ ६पृ ८२५, ठा ५ उ १ सू ३८९, उपा अ.१ सू.६, ध अधि २ श्लो २९ पृ ६७
इच्छामहं की कथा औत्पत्ति की बुद्धि पर	८४९	६	२८१	न सू २७ गा ६५ टी.
१ इच्छालोभिक	४४४	२	४८	ठा ६उ.३सू ५२९, बृ.(नी.)उ
इत्वरिक अनशन के छः भेद	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा ९ से ११
इन्द्र	७२९	३	४१५	तत्त्वार्थ. अध्या. ४ सू

१ लोभ में अधिक उपधि को ग्रहण करने वाला साधु।

१ पृथ्वीकाय।

१ श्रुत का कथन करने वाले तथा मूल पाठ सिखाने वाले आचार्य

१ ज्ञानाचार का एक भेद। २ गुणी पुरुषों की प्रशंसा करना।

ऊ

ऋ

ऐ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा अंजूकुमारी की	९१०	६	५०	वि० अ० १०
कथा अतिमुक्त कुमार की	७७६	४	१९८	अंत० व० ६ अ० १५
कथा अनाथी मुनि की	८५४	५	१३०	उत्त० अ० २०
कथा अभग्गसेन चोर की	९१०	६	३७	वि० अ० ३
कथा अभयकुमार की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	७४	नं० सू० २७ गा० ७२, आव० ह० नि० गा० ९४९
कथा अमात्य (मंत्री) की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८५	त्रि०प०पर्व० ६, नं० सू० २७ गा ७२, आव ह नि. गा० ९४९
कथा अमात्य पुत्र की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	९०	उत्त. अ. १३ टी., आव० ह० नि० गा० ९५०, नं० सू० २७ गा० ७३
कथा अर्जुनमाली की	७७६	४	१९६	अंत० व० ६ अ० ३
कथा अर्थशास्त्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२८०	नं० सू० २७ गा० ६५ टी०
कथा अश्वों की	९००	५	४६९	ज्ञा० अ० १७
कथा आँवले की पारिणामिकी बुद्धि विषयक	९१५	६	११२	नं० सू० २७ गा० ७६, आव० ह० नि० गा० ९५१
कथा आर्याषाढ़ आचार्य की स्थिरीकरण पर	८२१	४	४६९	नवपद० सम्यक्त्वाधिकार गा० १८ टी०
कथा इक्कीस पारिणामिकी बुद्धि की	९१५	६	७३	नं० सू० २७ गा० ७१-७४, आव ह० नि. गा० ९४८-९५१
कथा इच्छामहं की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२८१	नं० सू० २७ गा० ६५ टी०
कथा उच्चार (मल परीक्षा) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४६	६	२६४	नं० सू० २७ गा० ६३ टी०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा देवदत्ता रानी की	९१०	६	४७	वि. अ. ९
कथा देवी पुष्पवती की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८०	न. सू. २७ गा ७२, आव.ह नि गा. ९४९
कथा धनदत्त की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८३	नं सू.२७ गा. ७२, ज्ञा. अ. १८, आव ह. नि. गा ९४९
कथा धनपति कुमार की	९१०	६	५९	वि. अ १६
कथा धन सार्थवाह की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१	४	४४६	नवपद. गा. १६ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा धन्नाकुमार की	७७६	४	२०४	अणु व. ३ अ १
कथा धन्ना सार्थवाह और विजय चोर की	९००	५	४३४	ज्ञा० अ० २
कथा नकुल की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४९	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ० नि० गा० १७२ पीठिका
कथा नन्द मणियार की	८२१	४	४४४	नवपद. गा. १५, ज्ञा अ १३
कथा नन्द मणियार की	९००	५	४६०	ज्ञा. अ. १३
कथा नन्दी फल की	९००	५	४६४	ज्ञा. अ १५
कथा नन्दीवर्धनकुमार की	९१०	६	४३	वि. अ. ६
कथा नन्दीषेण साधु की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८२	न सू. २७ गा. ७२, आव ह नि. गा. ९४९
कथा नाणक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७५	न. सू. २७ गा. ६५ टी.
कथा निन्दा पर	५७९	३	२८	आव. ह. अ ४ नि. गा. १२४२
कथा निवृत्ति पर	५७९	३	२६	आव. ह. अ. ४ नि. गा १२४२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कुलकर दस आगामी उत्सर्पिणी के	७६७	३	४५०	ठा० १० उ० ३ सू० ७६७
कुलकर दस गत ,,	७६६	३	४४९	ठा०१० उ०३ सू० ७६७
कुलकर ७ आगामी ,,	५११	२	२३९	ठा.७ उ.३ सू ५५६,सम १५९
कुलकर सात गत ,,	५१२	२	२३९	ठा ७ उ ३ सू ५५६,सम १५७
कुलकर सात वर्तमान अवसर्पिणी के	५०८	२	२३७	ठा ७ उ० ३ सू० ५५६,सम १५७,प्रै०भा० २ पृ० ३६२
कुलकोड़ी छःकाय की	४६३	२	६४	प्रव द्वा १५० गा ९६३-९६७
कुल धर्म	६९२	३	३६१	ठा० १० उ० ३ सू० ७६०
कुलपर्वत ३९ समयक्षेत्र के	९८६	७	१४४	सम० ३९
कुल मद	७०३	३	३७४	ठा.१० उ ३ सू ७१०,ठा.८ सु ६०६
कुलार्य	७८५	४	२६६	पृ उ १ नि गा ३२६३
कुव्यसन सात	९१८	६	१५५	गौ कु ज्ञा प्र.१८ सू १३७, पृ उ १ नि गा. ९४०
कुशध्वज राजा की कथा कांक्षा दोष के लिये	८२१	४	४५५	नवपद गा. १८ टी.
कुशील	३४७	१	३६०	आव ह.अ ३ नि.गा ११०७-११०८,प्रव द्वा.२गा १०९-११५
कुशील	३६६	१	३८१	ठा ५ उ ३ सू.४४५,भ.श. २५ उ० ६ सू० ७५१
कुशील के अठारह भेद	८९३	५	४१०	आव ह.अ.४ पृ ६५२
कुशील के तीन भेद	३४७	१	३६०	आव ह अ ३ नि गा ११०७ पृ ५१६ प्रव द्वा २ गा. १०९
कुशील के पांच भेद	३६९	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू० ४४५
१ कृतदान	७६८	३	४५२	ठा० १० उ० ३ सू० ७४५

१ पूर्वकृत उपकार के बदले दिया जाने वाला दान।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] कृतिकर्म	७६०	३	४४३	आचा अ.२ उ १ नि गा १८४
कृतिकर्म कल्प	६६२	३	२३८	पंचा १७ गा ३३-३५
[2] कृत्स्ना आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा.५ उ २ सू ४३३, सम.२८
[3] कृपण वनीपक	३७३	१	३८८	ठा० ५ उ० ३ सू ४५४
कृषिकर्म	७२	१	५२	जी.प्रति.३ उ १सू.१११,तन्दुल. सू. १४-१५ पृ. ४०
कृष्ण का अपरकंका गमन (आश्चर्य)	६८१	३	२८०	ठा.१० उ. ३ सू ७७७,प्रव द्वा. १३८ गा ८८५
कृष्ण का अपरकंकागमन	९००	५	४६६	ज्ञा. अ १६
[4] कृष्णपाक्षिक	८	१	७	भ श १३ उ.१ सू.४७०,ठा. २ उ २ सू ७६
[5] कृष्णराजियाँ आठ	६१६	३	१३३	ठा ८ उ.३ सू.६२३, भ. श ६ उ.५ सू.२४२, प्रव द्वा. २६७ गा १४४१ से १४५५
कृष्ण लेश्या	४७१	२	७३	उत्त अ.३४ गा.२१-२२,धर्म भा.४ गा. १३
कृष्णा रानी	६८६	३	३४१	अन्त व. ८ अ. ४
केवलज्ञान	३७५	१	३६१	ठा.५ उ ३ सू ४६३, नं सू १. कर्म. भा.१ गा. ४ व्याख्या
केवलज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न प २९ सू. ३१२
केवलज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४	ठा.५ उ ३ सू ४६४,कर्म भा १गा ४

१ वन्दना । २ प्रायश्चित्त का एक भेद । [illegible] । प्रशंसा [illegible] लेने वाला । ४ [illegible] से [illegible] [illegible] वाला जीव । ५ [illegible] [illegible] इत्यादि

१ कुत्सित चेष्टा कर सयम की घात करने वाला साधु ।

१ दूसरों को हँसाने के लिए [illegible]

१ साधु के निमित्त खरीदे हुए आहार को ग्रहण करना ।

ख

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
खड्ग (गेंडे) की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११६	नं सू. २७ गा. ७४, मल. टी. नि गा ९४१
खण्ड भेद	७५०	३	४३३	ठा. १० उ. ३ सू ७१३ टी, पन्न. प. ११ सू. १६४
खर पृथ्वी	४६५	२	६६	जी. प्रति. ३ सू. १०१
खर बादर पृथ्वी के ४० भेद	९८७	७	१४५	पन्न. प. १ सू. १५
खिंसित वचन	४५६	२	६२	ठा ६ उ. ३ सू. ५२७, प्रव द्वार २३५ गा १३२१, बृ (नी.) उ ६
खुड्ग (अंगूठी) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२५८	नं० सू० २७ गा० ६३ टी.
खुले मुँह कही गई भाषा सावद्य होती है या निरवद्य?	९१८	६	१५०	भग १६ उ २ सू ५६८
खेचर	४०९	१	४३६	पन्न प. १ सू. ३१, उत्त अ. ३६
खेलौषधि लब्धि	९५४	६	२९०	प्रव द्वा २७० गा १४९२
ख्याति	४९७	२	२२०	

ग

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गंठी मुट्ठी (ग्रन्थि मुष्टि) आदि पच्चक्खाण के आठ संकेत	५८९	३	४२	आव ह अ ६ नि गा १५७८, प्रव द्वा. ४ गा २००
गच्छप्रतिबद्ध यथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे० गा० ७ टी.
गच्छ में आचार्य उपाध्याय के पाँच कलहस्थान	३४४	१	३५५	ठा० ५ उ० १ सू० ३९९
गच्छाचार पइण्णा	६८९	३	३५४	द० प०
गज की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६४	नं सू. २७ गा ६३ टी.

---

* पृष्ठ. ३७ पर टिप्पणी देखो।

❀ जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर गान्धार ग्राम की जो सात मूर्छनाएँ छपी हैं वे संगीतशास्त्र नामक ग्रंथ मे ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा स्थानांग सूत्र में गान्धार ग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। इनकी गाथा इस प्रकार है :—

नंदी अ खुद्दिआ पूरिमा य चउत्थी अ सुद्धगंधारा ।
उत्तरगंधारा वि य सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥ १ ॥
सुट्ठुतरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा ।
अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा ॥ २ ॥

अर्थ—(१) नंदी (२) क्षुद्रिका (३) पूरिमा (४) शुद्धगान्धारा (५) उत्तरगान्धारा (६) सुट्ठुतरमायामा (७) उत्तरायतकोटिमा ।

घ

१ ग्रहणैषणा के दस दोषों में पहला 'शंकित' दोष है, इसके चालीस भेद हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चक्रवर्ती की सन्तान	७८३	४	२६४	ठी. प्रश्ना २ सू १३
चक्रवर्ती के एकेन्द्रिय रत्न	७८३	४	२६३	ठा ७ उ ३ सू. ५५८
चक्रवर्ती के एकेन्द्रियरत्नसात	५२८	२	२६५	ठा. ७ उ ३ सू ५५८
चक्रवर्ती के चौदह रत्न	८२८	५	२०	सम १४, ठा ७उ ३ सू ५५८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	७८३	४	२६३	ठा ७ उ ३ सू. ५५८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	५२८	२	२६५	ठा. ७ उ. ३ सू. ५५८
चक्रवर्ती बारह	७८३	४	२६०	ठा.सू ११२,५५८,६६३,सम १४,६६,१५८,ज वक्ष.३ सू.२२ टी ,आव ह.अ.१गा.३९२-४०१, त्रि.प.,ठी.प्रश्ना २,३ सू १३,२२
चक्रवर्ती बारह आगामी उत्सर्पिणी के	७८४	४	२६५	सम. १५८
चक्रवर्ती लब्धि	६५४	६	२६४	प्रव.द्वा २७० गा १४६७
[1] चक्रवाल श्रेणी	५४४	२	२८४	ठा ७ उ ३ सू. ५८१, भ श २५ उ ३ सू. ७३०
चक्षुदर्शन	१६६	१	१५७	ठा ४ सू ३६५,कर्म भा ४गा १२
चक्षुदर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न प. २६ सू. ३१२
चक्षुदर्शन की तरह श्रोत्रादि दर्शन क्यों नहीं कहे गये?	६८२	७	१०६	भ श १ उ. ३ सू ३७ टी.
चक्षुरिन्द्रिय	३६२	१	४१८	पन्न प.१५ सू १९१, ठा.५ उ.३ सू ४४३, जै प्र.
चक्षुर्लोलुप	४८४	२	४८	ठा.६ उ.३सू ५२२, धू.टी)३
चण्डकौशिक सर्प की पारिणामिकी बुद्धि पर कथा	६१५	६	११४	विप.गा३०,नंसू.२७गा ७४, आव ह. नि गा. ९४१

1 अनन्तप्रदेशों की यह श्रेणी जिसके द्वारा परमाणु आदि चार गति करते हैं।

१ शीत, उष्ण, रूक्ष और स्निग्ध ये चार स्पर्श वाले पुद्गल।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार कारणों से भयसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४४	१	१०६	ठा.४उ.४ सू ३५६, प्रव. द्वा. १४५ गा. ६७३ टी.
चार कारणों से मैथुनसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४५	१	१०६	ठा.४ उ.४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५ गा ६७३ टी
चार कारणों से साध्वी के साथ आलापसंलाप करता हुआ साधु निर्ग्रन्थाचार का अतिक्रमण नहीं करता	१८३	१	१३७	ठा ४उ २ सू० २९०
चार गति में चार संज्ञाओं का अल्पबहुत्व	१४७	१	१०७	पन्न.पद ८ सू १४८
चार छेद सूत्र	२०५	१	१८०	
१ चारण	४३८	२	४२	ठा.६ सू.४९१,पन्न.प १सू ३७
चारण लब्धि	६५४	६	२६२	प्रव द्वा २७० गा १४९३
चार दानी मेघ की उपमा से	१७५	१	१२६	ठा.४ उ ४ सू. ३४६
चार देशकथा	१५१	१	१०६	ठा.४उ.२ सू. २८२ टी.
चार दोष	२४४	१	२२१	पिं.नि.गा.१८२, ध.अधि ३ श्लो ५३ टी पृ १३६
चार द्वार अनुयोग के	२०८	१	१८५	अनु सू ५९
चार निक्षेप	२०९	१	१८६	अनु सू.१५०,न्यायप्र. अध्या ?
चार पर्याप्ति	२७२	१	२५१	ठा० ४ उ० ४ सू० ३५०
चार पुत्रवधुओं की कथा	९००	५	४४२	ज्ञा अ ७
चार पुद्गल परिणाम	२६६	१	२४७	ठा० ४ उ० १ सू० २६५
चार पुष्पकुम्भ की उपमा से	१६६	१	१२६	ठा.४ उ. ३ सू.३६०

१ चारण=विशिष्ट गति की विद्या जानने वाले महात्मा।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार भावना	२४६	१	२२४	भावना (परिशिष्ट.) [illegible] श्लो. ३५-५८, न.
चार भावना धर्मध्यान की	२२३	१	२०७	ठा.४ उ.१ सू.२४७ भग.श.२५ उ.७ सू.८०३, आव.ह.अ.४ [illegible] ज्ञानार्णव [illegible], उव.सू.[illegible]
चार भावना शुक्लध्यान की	२२८	१	२१२	
चार भाव प्राण	१६८	१	१५७	पन्न.प.१ सू.१ टी.
चारभेद आक्षेपणी कथा के	१५४	१	११२	ठा.४ उ.२ सू.२८२, दश.अ.३ नि.गा.१९४-१९५
चार भेद उपमा संख्या के	२०३	१	१६१	अनु.सू.१४६ पृ.२३१
चार भेद क्रोध के उपमा सहित	१५६	१	१२०	पन्न.प.१४ सू.१८८, ठा.४ सू.२४९, २९३, कर्म.भा.१ गा.१९
चार भेद गति के	१३१	१	९९	पन्न.प.२३ उ.२ सू.२९३, कर्म.भा.४ गा.१०
चार भेद चतुष्पद तिर्यंच-पंचेन्द्रिय के	२७१	१	२५०	ठा.४ उ.४ सू.३५०
चार भेद दर्शन के	१६९	१	१५७	ठा.४ उ.[illegible] ३६५, कर्म.भा.४ गा.१२
चार भेद देवों के	१३६	१	१०१	उत्त.अ.३६ गा.२०३
चार भेद धर्म कथा के	१५३	१	११२	ठा.४ उ.२ सू.२८२
चार भेद धर्मध्यान के	२२०	१	२०१	ठा.४ उ.१ सू.२४७
चार भेद धर्मध्यान के	२२४	१	२०८	ज्ञानार्णव ३३-४०, यो.प्रका. ७-१०, [illegible]
चार भेद ध्यान के	२२५	१	१९३	ठा.४ उ.१ सू.२४७, [illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार भेद निकाचित के	२५२	१	२३६	ठा० ४ उ० २ सू० २९६
चार भेद निधत्त के	२५१	१	२३६	ठा ४ उ० २ सू० २९६
चार भेद निर्वेदनी कथा के	१५७	१	११५	ठा ४ उ २ सू २८२
चार भेद प्रायश्चित्त के	२४५ख	१	२२३	ठा० ४ उ० १ सू २६३
चार भेद बुद्धि के	२०१	१	१५९	न सू. २६, ठा० ४ उ० ४ सू ३६४
चार भेद मतिज्ञान के	२००	१	१५८	ठा० ४ उ० ४ सू० ३६४
चार भेद मान के उपमा सहित	१६०	१	१३१	पन्न. प १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २९३, कर्म भा १ गा १९
चार भेद माया के उपमा सहित	१६१	१	१२१	पन्न प. १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २९३, कर्म० भा १ गा २०
चार भेद मोक्ष मार्ग के	१९५	१	१५३	उत्त अ २८ गा २
चार भेद लोभ के उपमा सहित	१६२	१	१२२	पन्न प १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २९३, कर्म भा १ गा २०
चार भेद वादी के	१९१	१	१४४	भ श ३० उ १ सू ८२४ टी, आचा. श्रु १ अ १ उ १ सू ३ टी, सूय श्रु १ अ. १२
चार भेद विक्षेपणी कथा के	१५५	१	११३	ठा ४ उ २ सू २८२, दश अ ३ नि गा १६७-१६८
चार भेद शुक्ल ध्यान के	२२५	१	२०९	ठा ४ सू २४७ ज्ञान प्रक ४२, क भा २ श्लो २११-२१९, आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ७७-८२
चार भेद संवेगनी कथा के	१५६	१	११४	ठा ४ उ २ सू २८२
चार भेद सामायिक के	१९०	१	१४३	ध अधि २ श्लो ३७ टी, विशे गा. २६७३-२६७७
चार भेद स्त्री कथा के	१४९	१	१०७	ठा ४ उ २ सू. २८२ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार मंगल रूप, लोकोत्तम, तथा शरण रूप हैं	१२६क	१	६४	आव.ह. अ.४ पृ.५६६
चार महाव्रत	१८०	१	१३५	ठा० ४ उ० १ सू० २६६
* चार मूल सूत्र	२०४	१	१६३	
चार मूलातिशय अरिहन्त भगवान् के	१२६ख	१	६६	स्या का. १ टी.
चार मेघ	१७२	१	१२७	ठा० ४ उ० ४ सू ३४६
चार मेघ	१७४ख	१	१२६	ठा.४ उ.४ सू ३४६
चार राजकथा	१५२	१	११०	ठा.४ उ.२ सू. २८२ टी
चार लक्षण रौद्रध्यान के	२१६	१	२००	ठा ४ उ १ सू २४७ भग श २५ उ ७ सू ८०३, आव ह अ ४ ध्यानशतक गा १६, ५५, ६७, ६८, ७०
चार लिंग आर्त्तध्यान के	२१७	१	१६८	
चार लिंग धर्मध्यान के	२२१	१	२०५	
चार लिंग शुक्ल ध्यान के	२२६	१	२११	
चार वन जंबूद्वीप के मेरु पर्वत पर	२७३	१	२५१	ठा ४ उ. २ सू. ३०२
चार वाचना के अपात्र	२०७	१	१८५	ठा.४ उ.३ सू. ३२६
चार वाचना के पात्र	२०६	१	१८५	ठा.४ उ.३ सू. ३२६
चार वादी	१६२	१	१४६	आचा. श्रु.१ अ.१ उ.१ सू ३
चार विकथा	१४८	१	१०७	ठा०४ उ०२ सू० २८२

* चार मूलसूत्र में उत्तराध्ययन सूत्र का व्याख्यान करते हुए बतलाया है कि [illegible] चार मूल सूत्र पढ़ाया जाता है इसलिए यह उत्तराध्ययन कहलाता है। [illegible] आचारांग सूत्र के बाद उत्तराध्ययन सूत्र पढ़ाने का [illegible] है। [illegible] श्री [illegible] स्वामी [illegible] उत्तराध्ययन [illegible] दशवैकालिक के बाद पढ़ाया जाता है [illegible] टीका में [illegible] है और यही परिपाटी [illegible] है।

१ चोर को चोरी के लिए प्रोत्साहन देना तथा अन्य किसी प्रकार से सहायता देना।

१ चार मास का गुरु प्रायश्चित्त। २ चार मास का लघु प्रायश्चित्त।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
* चौबीस जात्युत्तर	९३६	६	२०६	[illegible] न्यायप्र, न्याय [illegible]
चौबीस तीर्थङ्कर ऐरवत क्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३१	६	१८७	सम. १५८, प्रव. द्वा ७ गा. ३००-३०३
चौबीस तीर्थङ्कर ऐरवत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२८	६	१७६	सम १५९, प्रव द्वा ७ गा २९६-२९८
चौबीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३०	६	१८६	सम० १५८, प्रव० द्वा० ७ गा० २९३ २९५
चौबीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के गत उत्सर्पिणी के	९२७	६	१७३	प्रव० द्वा० ७ गा २८८-२९०
चौबीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२९	६	१७७	सम १५७, आव० नि० गा. ३०२ से ३२०, आव म गा ३२१ से ३२८, स. म., प्रव द्वा ७-४६
चौबीस तीर्थङ्करों के सत्ताईस बोलों का यंत्र तथा उन सम्बन्धी अन्य तेईस बोल	९२९	६	१७८	सम. १५७, आव नि गा ३०२ से ३२०, आव म गा ३२१-३२८, स.म. प्रव. द्वा. ७-४६
चौबीस दण्डक	९३४	६	२०४	ठा. १ सू. ५१ टी., भग. श. १३ टी.
चौबीस धान्य	९३५	६	२०५	दश. अ. ६ नि. गा. २५२ २५३

छ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः आगार प्रत्याख्यान पालने के	४८२	२	८६	आव ह. नि. गा. १५९३ पृ. ८५१, ध. अधि. २ श्लो. [illegible]
छः अकर्मभूमि जंबूद्वीप की	४२५	२	४१	ठा. ६ उ. ३ सू. ५२२
छः अनन्त	४८८	२	१००	अनु. सू. १४७ टी., आ. ठा. [illegible]

* [illegible] जात्युत्तर है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः अप्रमाद प्रतिलेखना	४४८	२	५२	ठा ६सू ५०३,उत्त अ २६गा २५
छः अप्रशस्त वचन	४५६	२	६२	ठा ६ उ.३सू ५२७, प्रव द्वा २३५गा १३२१,बृ(जी)उ ६
छः आगार पोरिसी के	४८३	२	६७	आव ह.अ ६ पृ ८५२,प्रव द्वा ४
छः आगार समकित के	४५५	२	५८	उपा अ १सू ८,आव ह अ.६ पृ ८१०,ध अधि २श्लो.२२पृ.४१
छःआभ्यन्तर तप	४७८	२	८६	उव सू २०,उत्त अ.३० गा ३०, प्रव द्वा ६गा २७१,ठा ६सू ५११
छः आरे अवसर्पिणी के	४३०	२	२६	ज वक्ष २सू १६-३६,ठा ६ उ ३ सू ४६२,भ श ७उ.६सू २८७
छः आरे उत्सर्पिणी के	४३१	२	३५	ज वक्ष २सू ३७-४०,ठा ६ उ ३ सू ४६२,विशे गा २७०८-१०
छः आवश्यक	४७६	२	९०	आव ह.
छः इत्वरिक अनशन	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा ६-११
छः उपक्रम	४२७	२	२५	अनु सू ७०
छः ऋतुएं	४३२	२	४०	ठा ६उ ३ सू ५२३ वृ हो
छः ऋद्धि प्राप्त आर्य	४३८	२	४२	ठा ६सू ४६१,पन्न.प १ सू ३७
छः कर्त्तव्य आचार्य के	४५१	२	५५	ठा ७ उ ३ सू ५७० टी
१ छः कल्प पलिमन्थु	४४४	२	४७	ठा ६उ ३सू ५२६,बृ (जी) उ ६
छः कल्पस्थिति	४४३	२	४५	ठा ३उ ४सू २०६,ठा.६ उ ३ सू ५३०, बृ (जी) उ ६
छःकाय	४६२	२	६३	ठा ६उ ३सू ४८०,दश अ ४, कर्म भा ४ गा. १०
छः काय का अल्पबहुत्व	४६४	२	६५	जी प्रति २सू ६२,पन्न प ३ द्वा ४
छः काय की कुलकोटियाँ	४६३	२	६४	प्रव द्वा १५० गा ९६३-९६७

१ कल्प यानी साधु के आचार का मन्थन अर्थात् घात करने वाले ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः पर्याप्ति	४७२	२	७७	पन्न प १ सू १२टी., भ श ३ उ १सू १३०,प्रव द्वा २३२गा १३१७-१८,कर्म भा १गा ४६
छः पर्व अधिक तिथि वाले	४३४	२	४१	ठा ६ सू ५२४,चन्द्र प्रा १२
छः पर्व न्यूनतिथि वाले	४३३	२	४०	ठा ६ उ ३सू ५२४, चन्द्र प्रा १२,उत्त अ. २६ गा १५
छः प्रकार का अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६सू ५२६, न.सू ६-१५
छः प्रकार का आयुबन्ध	४७३	२	७६	भ श ६उ ८,ठा ६ उ ३सू ५३६
छः प्रकार का प्रश्न	४६४	२	१०३	ठा ६ उ ३ सू० ५३४
छः प्रकारका भोजनपरिणाम	४८६	२	६८	ठा ६ उ ३ सू ५३३
छः प्रकार का विवाद	४६३	२	१०३	ठा ६ उ ३ सू ५१२
छः प्रकार की गोचरी	४४६	२	५१	ठा ६सू ५१४,उत्त अ ३०गा १६,प्रव द्वा ६७गा ७४५,ध. अधि ३ श्लो २२टी पृ ३७
छः प्रकार के मनुष्य	४३७	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ४६०
छः प्रकार से झूठा कलंक लगाने वाले को प्रायश्चित्त	४६०	२	६२	बृ (जी) उ ६ सू २
छः प्रतिक्रमण	४८०	२	६४	ठा. ६ उ ३ सू ५३८
[1] छः प्रत्यनीक	४४५	२	४६	भ श. ८ उ ८ सू ३३६
छः प्रत्याख्यान विशुद्धि	४८१	२	६५	आव ह नि.गा १५८६ पृ ८४६, ठा ५ उ ३ सू ४६६ टी
छः प्रमाद	४५६	२	५६	ठा ६ उ ३सू ५०२
छः प्रमाद प्रतिलेखना	४४६	२	५३	ठा ६सू ५०३,उत्त अ २६गा २६
छः प्रश्न परदेशी राजा के	४६६	२	१०७	रा सू ६३-७७
छः बातें छद्मस्थ के अगोचर	४८६	२	१०१	ठा० ६ उ० ३ सू ४७८

[1] शत्रु की तरह प्रतिकूल आचरण करने वाला।

ज

१ त्रस जीवों के रोम से बना हुआ वस्त्र। २ पृष्ठ १३२ पर टिप्पणी देखो।

३ अनेक गीतार्थ मुनियों द्वारा की हुई मर्यादा का प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ जीत कहलाता है। उससे प्रवर्तित व्यवहार जीतव्यवहार है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जैन साधु के लिए मार्ग-प्रदर्शक बारह गाथाएं	७८१	४	२५५	उत्त अ २१ गा. १३-२४
ज्ञात, ज्ञातपुत्र	७७०	४	४	जैनविद्या वोल्यूम १ न १
ज्ञाता के नौ भेद	६४१	३	२१२	आचा. श्रु १ अ २ उ ५ सू ८८
ज्ञाताधर्मकथांग की १६ कथा	९००	५	४२७	
ज्ञाताधर्मकथांग के दोनों श्रुतस्कन्धों का विषयवर्णन	७७६	४	१८५	
ज्ञान	११	१	१०	पन्न प २९ सू ३१२
ज्ञान कुशील	३६६	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
⊛ज्ञान के चौदह अतिचार	८२४	५	१४	आव. ह अ ४ पृ ७३०
ज्ञान के दो भेद	१२	१	१०	ठा २ उ १ सू ७१, न सू २
ज्ञान के पाँच भेद	३७५	१	३९०	ठा ५ उ ३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न० सू १
ज्ञान गर्भित वैराग्य	६०	१	६५	क भा २ श्लो ११८-११९
ज्ञान नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८८
ज्ञानपरिणाम	७४९	३	४२७	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प १३
ज्ञान पुलाक	३६७	१	३८२	ठा ५ सू ४४५, भ श २५ उ ६
ज्ञान मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म० भा ४ गा. ११
ज्ञान विनय	४९८	२	२२९	उव सू २०, भ श २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८५, ध. अधि. ३ श्लो ५४ टी पृ. १४१

⊛ ज्ञान के चौदह अतिचारों में सुट्ठुदिन्न दुट्ठुपडिच्छिय दो अतिचार है। इनका अर्थ इस प्रकार है—

सुट्ठुदिन्न—शिष्य में शास्त्र ग्रहण करने की जितनी शक्ति है उससे अधिक पढ़ाना। यहा सुट्ठु शब्द का अर्थ है शक्ति या योग्यता से अधिक।

दुट्ठुपडिच्छिय—आगम को बुरे भाव से ग्रहण करना

१ शास्त्रार्थ के समय प्रतिवादी के जाति, कुल आदि के दोषों को निकाल कर उस पर व्यक्तिगत आक्षेप करना।

२ अभिग्रह विशेष, जिसके अनुसार साधु तभी आहार लेता है जब कि दिये जाने वाले आहार विशेष से दाता के हाथ और भाजन खरडे हुए हों।

१ वस्तु के यथार्थ स्वरूप का विचार।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तप आचार	३२४	१	३३३	ठा.५ उ.२ सू.४३२, ध अधि ३ श्लो ५४ पृ १४०
तप आदि के फल की दस प्रकार की इच्छा	६६७	३	२५३	ठा १० उ ३ सू. ७५६
तपः कर्म	७६०	३	४४३	आचा.श्र २ उ १ नि गा १८३
तप के बारह भेद	४७६, ४७८	२	८५, ८६	उत्त अ ३०, उव सू १६,२०, ठा.६ उ ३ सू ५११, प्रव. द्वा ६ गा २७०-२७१
तप के विषय में ११ गाथा	६६४	७	२०२	
तप धर्म	१६६	१	१५५	भ.श २५ उ ७, उत्त अ ३० गा ८
तप मद	७०३	३	३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
तप समाधि के चार भेद	५५३	२	२६४	दश अ ६ उ. ४
१ तयालीस प्रवचन संग्रह	६६४	७	१५१	उत्त, दश, आचा, सूय, प्रश्न., द प., भ, ज्ञा, दशा, पि नि, ध र., विशे, आव ह, उव, ध, आगम, समय, त्रू, पंच व, प्रतिमा
तरु पतन मरण	७६८	४	२६६	भ.श २ उ १ सू ६१
तर्क	३७६	१	३६५	रत्ना परि ३ सू ७
तापसश्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ६४ गा ७३१
तिथियों के पन्द्रह नाम	८५७	५	१४२	चन्द्र प्रा १० प्रा प्रा १४
२ तिन्तिणक	४४४	२	४८	ठा ६ सू ५२६, वृ (जी) उ ६
३ तिरीडपट्ट वस्त्र	३७४	१	३८६	ठा.५ उ ३ सू० ४४६

१ भिन्न भिन्न तयालीस विषयों पर आगम तथा धर्मग्रन्थों की गाथा एवं पाठों का सुन्दर संग्रह। यह संग्रह स्वाध्यायप्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

२ चिड़चिड़े स्वभाव वाला व्यक्ति, कल्पपलिमन्थु का एक भेद।

३ तिरीड वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र।

१ दुःखपूर्वक कठिनता से समझाये जाने वाले जीव।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन भेद करण के	७८	१	५५	आगम.,आव.म गा १०३६-१० टी, विशे गा १२०२-१२१८, प्रव द्वा २१४ गा १३०२टी, कर्म भा २ गा २ व्याख्या
तीन भेद करण के	९४	१	६७	ठा ३ उ १ सू १२४
तीन भेद गारव के	९८	१	७०	ठा ३ उ.४ सू २१५
तीन भेद गुणव्रत के	१२८(क)	१	९१	आव.ह अ ६ पृ ८२६-८२९
तीन भेद गुप्ति के	१२८(ख)	१	९२	उत्त अ २४, ठा ३ सू १२६
तीन भेद जन्म के	६६	१	४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
तीन भेद जीव के	६९	१	५०	भ श ६ उ ३ सू २३७
तीन भेद तत्त्व के	६३	१	४४	यो प्रका २ श्लो ४-११, ध अधि २ श्लो.२१-२२ टी पृ. ३१
तीन भेद दण्ड के	९६	१	६९	सम ३, आचा श्रु.१ अ ४ उ.१ सू.१२६टी, ठा ३ उ १ सू १२
तीन भेद दर्शन के	७७	१	५५	ठा.३ सू १८४ भग श ८ उ २
तीन भेद देवोंकी ऋद्धि के	१००	१	७०	ठा० ३ उ० ४ सू० २१४
तीन भेद द्रव्यानुपूर्वी के	११९	१	८४	अनु सू ९६-९८ टी.
तीन भेद धर्म के	७६	१	५४	ठा ३ उ ३,४ सू १८८,२१७
तीन भेद पल्योपम के	१०८	१	७५	अनु सू १३८-१४०, प्रव.द्वा १५८ गा १०१८-१०२६
तीन भेद भाव इन्द्र के	९२	१	६६	ठा० ३ उ० १ सू० ११६
तीन भेद मनुष्य के	७१	१	५१	ठा ३ उ.१ सू १३०, पन्न प १ सू ३७, जी प्रति.३ सू.१०७
तीन भेद मोक्षमार्ग के	७९	१	५७	उत्त.अ २८ गा.३०, तत्त्वार्थ अध्या १ सू १
तीन भेद योग के	९५	१	६८	ठा.३ सू १२४, तत्त्वार्थ.अध्या

द

* पृष्ठ ३७ पर टिप्पणी देखो।

१ पाप या दोषों के सेवन से होने वाली संयम की विराधना।

१ दुष्ट स्वभाव, कन्दर्पभावना का एक भेद।

२ पृष्ठ १४३ पर टिप्पणी देखो

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दुर्लभबोधि के पाँच कारण	२८६	१	२६६	ठा.५ उ.२ सू.४२६
दुर्लभ बोल छः	४३९	२	४३	ठा.६ उ.३ सू.४८५
दुर्लभ मनुष्य भव के दस दृष्टान्त	६८०	३	२७१	उत्त.अ.३ नि.गा.१६०, आव.ह. नि.गा.८३२ पृ.३४०
दुषमदुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	जं.वक्ष.२ सू.३६, ठा.६ सू.४९२, भ.श.७ उ.६ सू.२८७-२८८
दुषमदुषमा आरा उत्स० का	४३१	२	३६	जं.वक्ष.२ सू.३७, ठा.६ सू.४९२
दुषमसुषमा आरा अव० का	४३०	२	३२	जं.वक्ष.२ सू.३४, ठा.६ सू.४९२
दुषमसुषमा आरा उत्स० का	४३१	२	३७	जं.वक्ष.२ सू.३७, ठा.६ सू.४९२
दुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	जं.वक्ष.२ सू.३५, ठा.६ सू.४९२
दुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३६	जं.वक्ष.२ सू.३७, ठा.६ सू.४९२
दुषमाकाल जानने के स्थान	५३४	२	२६८	ठा.७ उ.३ सू.५५९
दुष्प्रत्याख्यान	५४	१	३१	भ.श.७ उ.२ सू.२७१
दूती दोष (गवेषणैषणा का एक दोष)	८६६	५	१६४	प्रव.गा.५६७, ध.अधि.३ श्लो.२२ पृ.४०, पि.नि.गा.४०८, पिं.वि.गा.५८, पंचा.१३ गा.१८
१दूषणाभास (जात्युत्तर) चौबीस	९३६	६	२०६	प्र.मी.अध्या.१ आ.२ सू.२८, न्यायप्र., न्यायसू.अध्या.५ आ.१
दूषित दाता चालीस	९८८	७	१४६	पिं.नि.गा.५२०
२दृष्टलाभिक	३५४	१	३६९	ठा.५ उ.१ सू.३९६
दृष्टान्त	३८०	१	३९७	रत्ना.परि.३, न्याय दी.प्रका.३
दृष्टान्त इक्कीस पारिणामिकी बुद्धि के	९१५	६	७३-१२६	नं.सू.२७ गा.७१-७४, आव.ह.नि.गा.९४८-९५१

१ पृष्ठ १३० पर टिप्पणी देखो।

२ देखे हुए आहार की गवेषणा करने वाला अभिग्रहधारी साधु।

१ सम्यग्दृष्टि होना, शुभकर्म बांधने का एक कारण।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवलोक में ज्ञान	८०८	४	३३०	जी प्रति ३ सू २१६
देवलोक में दृष्टि	८०८	४	३३०	जी प्रति ३ सू २१५
देवलोकमेंदेवोत्पत्तिसंख्या	८०८	४	३२८	जी प्रति ३ सू २१२
देवलोक में प्रवीचार	८०८	४	३३३	तत्त्वार्थ अध्या ४सू ८,९.
देवलोक में लेश्या	८०८	४	३३०	जी प्रति ३ सू २१५
देवलोक में विकुर्वणा	८०८	४	३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देवलोक में वेदना	८०८	४	३३६	तत्त्वार्थ. अध्या ४,उव सू ३८
देवलोक में समुद्घात	८०८	४	३३१	जी.प्रति ३ सू २१७
देवलोक मेंसुख और ऋद्धि	८०८	४	३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देव वैमानिक के २६ भेद	६४४	६	२२७	पन्न प.१सू ३८,उत्त अ ३६गा २०७-१४,भ श ८उ.१सू ३१०
देवसम्बन्धी उपसर्ग चार	२४०	१	२१६	ठा ४उ ४सू ३६१, सूय अ ३ उ १नि गा ४८टी
१ देवाधिदेव	४२२	१	४४६	ठा ५उ १सू ४०१,भ श १२ उ.६ सू.४६२
देवाभियोग आगार	४५५	२	५६	उपा अ.१सू ८,आव ह.अ ६पृ ८१०,ध अधि २श्लो २२पृ ४१
देवार्य-भ०महावीरकानाम	७७०	४	१०	जैनविद्या वोल्यूम१ नं: १
देविंदथव पइण्णा	६८६	३	३५५	द प.
देवी(पुष्पवती)कीपारिणामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	८०	न सू २७गा ७२, आव ह नि. गा.६४६
देवेन्द्रावग्रह	३३४	१	३४४	भ श १६उ २सू ५६७,प्रव द्वा ८५ गा.६८१,आचा.श्रु २ चू १ अ ७उ.२ सू १६२

१ देवों से भी बढ़कर अतिशय वाले,अतएव उनकेभी आराध्य,केवलज्ञान केवल-दर्शन के धारक अरिहन्त भगवान् देवाधिदेव कहलाते है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो प्रकार जीव के	७ख	१	४	ठा २ सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या. २
दो प्रकार ज्ञान के प्रमाण, नय	३७	१	२३	रत्ना परि १, ७
दो प्रकार प्रवचन माता के	२२	१	१६	उत्त. अ २४
दो भेद अधिकरण के	५०	१	२६	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू. ७
दो भेद अवग्रह के	५८	१	४०	न सू २८, कर्म भा. १ गा ४, ५
दो भेद आकाश के	३४	१	२२	ठा. २ उ. १ सू ७४
दो भेद आधार और आधेय	४८	१	२८	विशे गा. १४०६
दो भेद आयु के	३०	१	२१	तत्त्वार्थ. अध्या २ सू ५२, भ. श. २० उ १ सू ६८५
दो भेद-आरंभ और परिग्रह	४६	१	२६	ठा. २ उ १ सू ६४
दो भेद-आविर्भाव, तिरोभाव	४४	१	२७	न्याय को
दो भेद इन्द्रिय के	२३	१	१७	पन्न. प. १५ सू. १९१ टी, तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू १६
दो भेद ऊनोदरी के	२१	१	१६	भ. श. २५ उ ७ सू ८०२
दो भेद कर्म के दो प्रकार से	२७	१	१८	कर्म. भा १ गा १ व्याख्या, अष्ट ३०, कम्म. गा १५, ६, वि अ. ३ सू २० टी
दो भेद कारण के	३५	१	२३	विशे गा २०९६
दो भेद-कार्य और कारण	४३	१	२७	न्याय को
दो भेद काल के	३२	१	२३	ठा २ उ ४ सू ६६
दो भेद कालचक्र के	३३	१	२२	ठा २ उ १ सू ७४
दो भेद गुण और पर्याय	४७	१	२८	उत्त अ २८ गा ६
दो भेद गुण के दो प्रकार से	५५	१	३२	सूय. अ १४ नि गा १३६, पचा ५ गा २, द्रव्यत अध्या १२ श्लो ८
दो भेद चारित्रधर्म के	२०	१	१५	ठा २ उ १ सू ७२
दो भेद चारित्रमोहनीय के	२६	१	२०	पन्न प. १४ सू १८६ टी, कर्म भा. १

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद ज्ञान के	१२	१	१०	न सू २, ठा २ उ. १ सू. ७१
दो भेद दण्ड के	३६	१	२३	ठा २ उ १ सू ६६
दो भेद देवता के	५७	१	४०	तत्त्वार्थ. अध्या. ४ सू. १७
दो भेद-द्रव्य और गुण	४६	१	२८	उत्त अ. २८ गा ६, तत्त्वार्थ. अध्या ५
दो भेद द्रव्य के	६०	१	४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३, ४
दो भेद द्रव्येन्द्रिय के	२४	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १७
दो भेद धर्म के	१८	१	१४	दश. अ १ गा. १ टी, ठा. २ उ. १ सू ७२, ध. अधि. १ श्लो. ३ टी पृ १
दो भेद नय के	१७	१	१४	रत्ना परि ७ सू ५
दो भेद निगोद के	९	१	८	आगम.
दो भेद परोक्ष ज्ञान के	१५	१	१२	पन्न. प २९ सू ३१२, ठा २ उ १ सू ७१, भ. श. ८ उ. २ सू ३१८, न सू १, कर्म भा १ गा ४
दो भेद प्रत्याख्यान के	५४	१	३१	भ श ७ उ २ सू २७१
दो भेद प्रवृत्ति और निवृत्ति	४५	१	२८	
दो भेद बन्ध के	५२	१	३०	कर्म भा. १ गा. ३५ व्याख्या
दो भेद बन्धन के	२६	१	१८	ठा २ उ ४ सू ९६
दो भेद भावेन्द्रिय के	२५	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १८
दो भेद मरण के	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २
दो भेद मोहनीय कर्म के	२८	१	१९	ठा. २ सू. १०५, कर्म. भा १ गा १३
दो भेद रूपी के	६१	१	४२	भ श १२ उ ५ सू ४५०
दो भेद लक्षण के	६२	१	४२	न्यायदी प्रका. १
दो भेद वेदनीय कर्म के	५१	१	३०	पन्न प २३, कर्म. भा १ गा. १२
दो भेद श्रुतज्ञान के	१६	१	१३	न सू ४४, ठा. २ उ १ सू ७१
दो भेद श्रुतधर्म के	१९	१	१५	ठा २ उ १ सू ७२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद श्रेणी के	५९	१	३३	कर्म भा २ गा २, द्रव्यलो स ३ श्लो ११६६-१२३४, विशे. गा १२८४, आव म गा ११६-१२२
दो भेद संसारी जीव के नौ प्रकार से	८	१	४	ठा. २सु ७२, ७६, १०१, भ श. १२ उ १सू ४७०टी, आप्र गा ६६-६७, आतुर गा ४२-४३
दो भेद सम्यक्त्व के चार प्रकार से	१०	१	८	प्रव द्वा १४६गा ६४२टी, कर्म भा १गा १५, ठा २सू ७०, पन्न प. १सू ३७, तत्त्वार्थ अध्या १सू ३
दो भेद सामान्य के दो प्रकार से	५६	१	४१	रत्ना परि ७सू १५, १६, रत्ना परि ५ सू ३-५
दो भेद स्थिति के	३१	१	२१	ठा २ उ. ३सू ८५
दो भेद-हेतु और साध्य	४२	१	२७	रत्ना परि ३सू ११, १४
दो राशि	७(क)	१	४	सम १४६
दो विवक्षा-मुख्य और गौण	३८	१	२४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३१
दोष	७२३	३	४११	ठा. १० उ ३ सू ७४३
दोष अठारह दो प्रकार से जो अरिहन्त देव में नहीं होते	८८७	५	३६७	प्रव द्वा ४१गा ४५१-४५३, स श द्वा ६६गा १६१-१६२,
दोष अठारह पौषध के	८६४	५	४१०	शिक्षा
दोष आठ अनेकान्तवाद पर	५६४	३	१०२	प्र मी अध्या १ आ १ सू. ३३
दोष आठ चित्त के	६०३	३	१२०	क भा २ श्लो. १६०-१६१
दोष आठ साधु को वर्जनीय	५८३	३	३८	उत्त अ २४ गा ६-१०
दोष उन्नीस कायोत्सर्ग के	८६६	५	४२५	आव ह अ ५गा १५४६-४७, प्रव. द्वा ५गा २४७, यो प्रका ३पृ. २५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दोष चार	२४४	१	२२१	पिं नि गा. १८२, ध अधि ३ श्लो. ५३ टी. पृ १३६
दोष दस आलोचना के	६७२	३	२५६	भ श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दोष दस मन के सामायिक के	७६४	३	४४७	शिक्षा।
दोष दस वचन के ,, ,,	७६५	३	४४८	शिक्षा.
दोष दस वाद के	७२२	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४३
दोषनिर्घातनविनय के भेद	२३३	१	२१६	दशा. द ४
दोष पाँच ग्रासैषणा (मांडला) के	३३०	१	३३६	उत्त. अ २४ गा १२, उत्त अ. २६ गा. ३२, ध अधि ३ श्लो २३ टी. पृ ५५, पि नि गा ६३५-६६८
दोष बत्तीस तथा गुण आठ सूत्र के	६६७	७	२३	अनु सू १५१ टी, विशे गा ९९६, बृ. पीठिका नि गा. २७८-२८७
दोष बत्तीस वन्दना के	६६६	७	३८	आव ह. अ ३ गा. १२०७ १२११ पृ ५४३ बृ. उ ३ गा ४४७१-८४, प्रव द्वा २ गा १५०-१७३
दोष बत्तीस सामायिक के	६७०	७	४३	शिक्षा
दोष बयालीस आहारादि के	६६०	७	१४६	पिं. नि गा. ६६६
दोष १२ काया के सामायिक के	७८६	४	२७३	शिक्षा.
दोष विशेष दस	७२३	३	४१०	ठा. १० उ ३ सू ७४३
दोष शबल इक्कीस	६१३	६	६८	दशा० द० २, सम० २१
दोष सैंतालीस आहार के	१०००	७	२६५	पिं० नि० गा० ६६६
दो स्वरूप वस्तु के-निश्चय और व्यवहार	३६	१	२५	विशे गा ३५८९, द्रव्य. त. अध्या० ८ श्लो० १
द्यूत (जूआ) प्रमाद	४५६	२	६०	ठा. ६ उ. ३ सू ५०२
द्रव्य	४६	१	२८	उत्त अ २८ गा. ६, तत्त्वार्थ. अध्या. ५ सू. ४० टी.

ध

[1] नाम या व्याख्याता के प्रति द्वेष होने से उपदेश को अंगीकार न करने वाला जीव।

न

१ कर्मों को अपवर्तना, उद्वर्तना आदि सभी करणों के अयोग्य एवं अवश्यवेद्य बनाने वाला जीव का वीर्य विशेष निकाचनाकरण कहलाता है। २ छल जाति आदि से दूसरे को पराजित करना। ३ अपने पक्ष की सिद्धि न कर सकने के कारण वादी या प्रतिवादी की हार हो जाना।

१ जिससे कर्म उद्वर्तना और अपवर्तना करण के सिवाय शेष करणों के अयोग्य हो जाय ऐसा जीव का वीर्य विशेष।

१ फल भोग के लिए होने वाली कर्म पुद्गलों की रचना विशेष। २ स्थावरादि जीवों पर दयाभाव न रखना तथा बिना उपयोग गमनादि क्रिया करना।

प

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पच्चक्खाण के दस प्रकार	७०४	३	३७५	ठा.१०सू ७४८, भ.श ७ उ २
पच्चक्खाण में आठ तरह का संकेत (चिह्न)	५८९	३	४२	आव.ह.अ.६ नि गा.१५७८, प्रव द्वा ४ गा २००
पट की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६२	न सू.२७ गा ६३ टी.
पडिमा ग्यारह श्रावक की	७७४	४	१८	दशा. द.६, सम ११
पडिमा बारह भिक्खु की	७९५	४	२८५	सम १२,दशा द.७,भ श २उ १
पडिलेहणा पचीस	९३९	६	२१८	उत्त.अ २६ गा २४-२७
पडुच्चमक्खिएणं-निव्विगइ पच्चक्खाण का आगार	६२९	३	१७४	आव.ह अ ६पृ ८५४,प्रव द्वा.४ गा. २०५
पद्मापद्म के चौदह द्वार	८४२	५	३८	भ श १८उ.१ सू.६१६
पणित की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२५६	न सू.२७ गा.६३ टी.
पण्डित मरण	८७९	५	३८३	सम.१७,प्रव द्वा १५७गा.१००६
पण्डित वीर्यान्तराय	३८८	१	४११	कर्म भा १गा ५२,पन्न प.२३
[1] पण्य वस्तु चार	२६४	१	२४६	ज्ञा. अ ८ सू.६९
पतंग वीथिका गोचरी	४४६	२	५१	ठा ६सू ५१४,उत्त अ ३० गा. १९,प्रव द्वा ९७ गा ७४५, ध. अधि ३श्लो.२२टी. पृ ३७
पति की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६९	न सू २७ गा.६३ टी
पदवियाँ सात	५१३	२	२३९	ठा.३उ.३सू १७७ टी.
पद श्रुत	९०१	६	४	कर्म.भा १गा ७

[1] क्रयाणक, बेचने की वस्तु।

१ वस्तु स्वरूप का ज्ञान करना और ज्ञानपूर्वक उसे छोड़ना।

१ सीखा हुआ ज्ञान विस्मृत न हो इसके लिए उसे फेरना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच अतिचार प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के	३११	१	३११	उपा अ १सू ७
पाँच अतिचार संलेखना के	३१३	१	३१४	उपा अ.१सू ७,ध.अधि.२श्लो. ६६टी पृ.२३०
पाँच अतिचार सत्याणु व्रत के	३०२	१	२६४	उपा.अ १सू ७,ध अधि २श्लो.४४ पृ.१०१,आव.ह अ ६पृ.८२०
पाँच अतिचार समकित के	२८५	१	२६५	उपा.अ.१सू.७,आव ह पृ ८१०
पाँचअतिचारसामायिकव्रतके	३०६	१	३०६	उपा अ १सू ७,आव हपृ.८३१
पाँच अतिचार स्वदार संतोष व्रत के	३०४	१	२६८	उपा अ १सू.७ टी.
पाँच अतिशय आचार्य उपाध्याय के	३४२	१	३५३	ठा ५उ २ सू ४३८
पाँच अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५उ.३ सू ४६२
पाँच अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा ५उ.३सू ४६२
पाँच अनुत्तर केवली के	३७६	१	३६१	ठा.५ उ.१ सू.४१०
पाँच अनुत्तर विमान	३६६	१	४२०	पन्न प.१सू.३८,भ श.१४उ.७
[1] पाँच अभिगम श्रावक के	३१४	१	३१५	भ श.२ उ.५ सू १०६
पाँच अवग्रह	३३४	१	३४४	आचा श्रु.२चू १अ.७उ.२सू १६२,भ श १६उ.२सू ५६७ प्रव द्वा ८५गा ६८१
पाँच अवन्दनीय साधु	३४७	१	३५७	आव.ह अ.३ नि गा ११०७, पृ ५१६,प्रव द्वा.२गा १०३-२३
पाँच अशुभ भावना	४०१	१	४२८	प्रव.द्वा. ७३गा ६४१,उत्त.अ. ३६ गा.२६१-२६४

[1] साधु के सामने जाते समय सचित्त द्रव्यादित्याग रूप पाले जाने वाले नियम ।

1 मोक्ष प्राप्ति के लिये किये जाने वाला ज्ञानादि आसेवन रूप अनुष्ठान विशेष।

2 काम अर्थात् अभिलाषा को उत्पन्न करने वाले गुण, शब्दादि।

१ काव्य में विशेष अशुभ तथा दूषित माने जाने वाले अक्षर।

[1] चक्रवर्ती की नौ महानिधियों में से दूसरी निधि।

१ पृष्ठ २७ पर टिप्पणी देखो।

१ सीखे हुए सूत्रादि ज्ञान में शंका होने पर प्रश्न करना ।

1 आहार आदि के लिए पूछने वाले दाता से ही भिक्षा लेने वाला अभिग्रहधारी साधु।

2 कपास का बना हुआ वस्त्र।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पौद्गलिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	प्रव द्वा १४६ गा ९४२ टी.
पौषध के अठारह दोष	८९४	५	४१०	शिक्षा.
पौषध के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा.अ १ सू ७
पौषध व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८४	आगम.
पौषधोपवास व्रत	१८६	१	१४०	पंचा १गा २९,आव ह अ ६पृ ८३५
[1] प्रकीर्णक	७२९	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
प्रकीर्ण तप	४७७	२	८८	उत्त अ ३० गा ११
प्रकृति बन्ध	२४७	१	२३१	ठा.४सू.२९६,कर्म.भा १गा २
प्रकृतियाँ २८ मोहनीय कर्म की	९५१	६	२८४	कर्म.भा १गा १३-२२,सम २८
प्रकृतियाँ ४१ उदीरणा बिना उदय में आने वाली	९८९	७	१४६	कर्म भा ६गा ५४-५५
प्रकृतियाँ ४२ नाम कर्म की	९९१	७	१४९	पन्न.प २३उ.२सू २९३
प्रकृतियाँ ४२ पुण्य की	९९३	७	१५०	कर्म.भा.५गा १५,१७
प्रचला	४१९	१	४४३	कर्म भा १गा.११, पन्न प २३ उ २सू २९३
प्रचलाप्रचला	४१९	१	४४३	
प्रच्छन्न काल आगार	४८३	२	९८	आव.ह अ ६पृ ८५३,प्रव द्वा.४
[2] प्रज्ञा अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १०उ ३सू ७७२
प्रतर तप	४७७	२	८७	उत्त अ ३०गा १०
प्रतर नरकों में	५६०	२	३२८	जी प्रति.३सू ७० टी
प्रतर भेद	७५०	३	४३३	ठा १०सू ७१३टी ,पन्न प ११

१ वे देव जो नगरनिवासी अथवा साधारण जनता की तरह रहते हैं।

२ दस अवस्थाओं में से एक अवस्था, इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष को अपने अभीष्ट की सिद्धि एवं कुटुम्बवृद्धि की बुद्धि उत्पन्न होती है।

१ संयम का सावधानता पूर्वक निर्दोष पालन करना प्रतिचरणा है।

२ गुरु ने पहले जिस कार्य के लिए निषेध कर दिया है उसी कार्य में आवश्यकतानुसार फिर प्रवृत्त होना हो तो विनय पूर्वक गुरु से पूछना।

१ एक रात्रि आदि की पडिमा अंगीकार कर कायोत्सर्ग में स्थिर रहने वाला साधु।

१ स्कन्ध या देश में मिला हुवा द्रव्य का अति सूक्ष्म विभाग।

२ इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष का स्वास्थ्य गिरने लगता है।

३ जो धर्म के प्रचार में सहायक होते हैं वे प्रभावक कहलाते हैं।

१ शास्त्रार्थ या विवाद के लिए [illegible] आदि [illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ प्रवचन उद्भावनता	७६३	३	४४६	ठा १० उ ३ सू ७५८
प्रवचन माता	२२	१	१६	उत्त. अ २४ गा. १-२
प्रवचन माता आठ	५७०	३	८	उत्त. अ २४ गा १-२, सम ८
प्रवचन वत्सलता	७६३	३	४४६	ठा. १० उ ३ सू ७५८
प्रवचन संग्रह तयालीस	६६४	७	१५१	उत्त, दश, आचा, सूय, प्रश्न, द प, भ, ज्ञा, विशे, आव ह., उव., ध., आगम, समय, चू, प्रतिमा., पचव., पिं नि, पि वि, ध र, दशा
प्रवर्तक पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ. ३ सू १७७ टी
प्रवृत्ति	४५	१	२८	
प्रव्रज्या के दस कारण	६६५	३	२५१	ठा. १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या दस	६६५	३	२५१	ठा १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या प्राप्त पुरुष चार	१७६	१	१३०	ठा ४ उ ४ सू ३२७
प्रव्रज्या स्थविर	६१	१	६६	ठा ३ उ ३ सू १५६
२ प्रव्राजकाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि. ३ लो ४६ टी पृ १२८
प्रशस्त काय विनय सात	५०३	२	२३२	भ श २५ उ ७ सू ८०२, ठा
प्रशस्त मन विनय सात	४९९	२	२३१	७ उ ३ सू ५८५, उव सू २०
प्रशस्त वचन विनय सात	५०१	२	२३२	भ श २५ उ ७, ठा ७ सू ५८५
प्रशान्त रस	६३९	३	२११	अनु सू १२६ गा ८०-८१
प्रशास्तृ दोष	७२२	३	४०७	ठा १० उ ३ सू ७४३
प्रशिथिलप्रमादप्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ. २६ गा २७

१ द्वादशाङ्ग रूप प्रवचन का वर्णवाद एवं गुण कीर्तन करना प्रवचन उद्भावनता है।

२ सामायिक व्रत आदि का आरोपण करने वाले आचार्य।

* पृथक् पृथक् शास्त्रों एवं धर्म ग्रन्थों में से चुन कर लिये हुए प्रश्न तथा उनके उत्तर।

१ भोजन से अवशिष्ट तुच्छ एवं हल्के आहार का गवेषक अभिग्रहधारी साधु।

फ

[1] दस अवस्थाओं में से चौथी अवस्था।

[2] ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानी और गुरु के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा रखना

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बारह ग्लान प्रतिचारी	७९७	४	२९७	प्रव द्वा ७१ गा.६२९ से ६३५, नवपद गा १२६ पृ ३१६
* बारह चक्रवर्ती	७८३	४	२६०	ठा ८ उ ३ सू.६३३, ठा २ उ ४ सू ११२, सम.६४, १५८, आव ह अ १ नि गा.३९७, त्रि प
बारह चक्रवर्ती आगामी उत्सर्पिणी के	७८४	४	२६५	सम. १५९
बारह दृष्टान्त अननुयोग तथा अनुयोग के	७८०	४	२३८	आव ह गा १३३-१३४, बृ पीठिका नि गा १७१-१७२
बारह दोष काया के सामायिक के	७८९	४	२७३	शिक्षा.
बारह द्वार कर्म प्रकृतियों के	८०९	४	३३६	कर्म भा ५ गा १-१९
बारह नाम ईषत्प्राग्भारा के	८१०	४	३५२	सम १२
बारह नाम मान के	७९०	४	२७५	भ.श १२ उ ५ सू ४४६
बारह पूर्णिमाएं	८००	४	३०२	सूर्य प्रा १० प्रा प्रा ६ सू ३८
बारह प्रकार का तप (निर्जरा)	४७६, ४७८	२, २	८५, ८९	उत्त अ ३०, उव सू १९-२०, ठा ६ सू ५११. प्रव द्वा.६ गा २७०
बारह प्रकार के आर्य	७८५	४	२६६	बृ उ १ नि.गा ३२६३
बारह बाल मरण	७९८	४	२९८	भ श २ उ १ सू ९१
बारह भावना (अनुप्रेक्षा)	८१२	४	३५५	शा भा १, २, भावना ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२-५७३, तत्त्वार्थ. अध्या ९ सू ७

* हरिभद्रीयावश्यक निर्युक्ति गाथा ४०१ में सुभूम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का सातवीं नरक में जाना, मघवा और सनत्कुमार चक्रवर्ती का तीसरे सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न होना एव शेष आठ चक्रवर्तियों का सिद्ध होना बतलाया है।

१ द्रव्यानुयोग का भेद, बाह्य (विलक्षण) और अबाह्य (समान) का विचार।
२ बीज से उगने वाली वनस्पति, जैसे शालि आदि।

भ

१ ब्राह्मण दान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला याचक।

१ पृष्ठ ३० पर टिप्पणी देखो।

१ राजा आदि के डर से दिया जाने वाला दान।

१ आगामी भव में देव होने वाला जीव । २ अलसी का बना हुआ वस्त्र ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भावना२५पाँचमहाव्रतकी	६३८	६	२१७	आचा.श्र २ चू ३ श्र २४ सू १७६,सम २५,आव ह श्र.४पृ. ६५८,पव द्वा ७२गा ६३६-४०, ध अधि ३श्लो ४५टीपृ.१२५
भावना पचीस पाँचमहाव्रतों की	३१७-३२१	१	३२४-३२६	
भावना बारह	८१२	४	३५५	शा भा १,२,भावना ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२-५७३ तत्वार्थ.अध्या ६सू ७
भाव निक्षेप	२०६	१	१८८	अनु सू १५०,न्याय.प्र.अध्या ६
भाव पाँच जीव के	३८७	१	४०७	अनु सू १२६,पव द्वा २२१ गा. १२६०-६८,कर्म भा.४गा.६४-६८
भाव पुद्गल परावर्तनसूक्ष्म और बादर का स्वरूप	६१८	३	१३६	कर्म.भा ५गा ८६-८८
भाव प्रतिक्रमण	३२६	१	३३६	ठा ५उ ३ सू.४६७,आव ह.अ ४ गा १२४०-१२४१ पृ५६४
भाव प्रत्यनीक	४४५	२	५१	भ श.८ उ८ सू ३३६
भाव प्रत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	ठा ६उ ३ सू५०२
भाव प्रमाणनामकेचारभेद	७१६	३	४०१	अनु सू १३०
भावप्राणकी व्याख्या,भेद	१६८	१	१५७	धा प.१ सू १टी.
भाव लेश्या	४७१	२	७२	भ श.१३ २,उत्त अ ३४,पन्न प १७उ ४,कर्म भा ४गा १३तथा पद्५३,आव ह अ.४ पृ ६४४, द्रव्यलोक स ३श्लो,२८४-३८४
भावशुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३७	ठा ५उ ३ सू ४६६,आव ह अ६पृ८४७
भावश्रावकके सत्तरह लक्षण	८८३	५	३६२	ध अधि.२श्लो.२२टी पृ.४८
भाव सत्य	६६८	३	३७०	ठा १०सू ७४१,पन्न प.११सू. १६४,ध अधि ३श्लो ४१पृ.१२१

१ औदारिक परिणाम आदि भावों का क्रम, परिपाटी।

२ द्रव्यानुयोग का एक भेद

म

१ पूरी वस्तु न लेकर टुकड़े की हुई वस्तु को ही लेने वाला अभिग्रहधारी साधु।

२ भुजाओं से चलने वाले जीव, चूहे आदि।

३ भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनों कालों में विद्यमान होने से जीव भूत कहलाता है।

[1] वाद या शास्त्रार्थ के समय अपनी जानी हुई बात को भी भूल जाना अथवा समय पर उसका याद न आना।

* श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर मध्य ग्राम की जो सात मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीत शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा ठाणांग सूत्र में मध्य ग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा।
समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा॥

अर्थ—उत्तरमंदा, रत्नी, उत्तरा, उत्तरासमा, समवक्रान्ता, सौवीरा और अभिरूपा।

१ केवल बीच बीच के घरों में भिक्षा लेने वाला अभिग्रहधारी साधु।

२ अढाई द्वीप और समुद्रों में रहे हुए संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मनोगत भावों को जानना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मनःपर्यय दर्शन नहीं है फिर मनःपर्ययज्ञानी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जानता और देखता है यह कैसे कहा ?	९८३	७	१०५	न०सू,१८टी ,विशे गा ८१४
मनःपर्याप्ति	४७२	२	७८	पन्न.प १सू १२टी ,भ श.३उ १सू १३०,प्रव द्वा २३२,कर्म भा १ गा ४६
मनःपुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६उ ३ सू ६७६
मनःशिला पृथ्वी	४६५	२	६६	जी प्रति ३ सू १०१
मनके दस दोष सामायिक के	७६४	३	४४७	शिक्षा०
मन विनय	४९८	२	२३०	उव सू २०,भ श २५उ.७ सू. ८०२,ठा ७उ ३सू ५८५, ध, अधि ३श्लो ५४टी पृ.१४१
मन विनय (अप्रशस्त) के बारह भेद	७६१	४	२७५	उव सू २०
मनविनय (अप्रशस्त) सात	५००	२	२३१	भ श २५उ.७सू ८०२,ठा ७ उ ३सू.५८५, उव सू २०
मन विनय (प्रशस्त) सात	४९९	२	२३१	
मनुष्य आयुबन्ध के ४ कारण	१३४	१	१००	ठा ४उ ४ सू ३७३
मनुष्य के छः प्रकार	४३७	२	४१	ठा ६उ ३ सू ४९०
मनुष्य के तीन भेद	७१	१	५१	ठा ३उ १सू १३०,पन्न प १सू ३७,जी प्रति ३सू १०७
मनुष्य के तीनसौ तीन भेद	६३३	३	१७९	पन्न प.१,उत्त अ ३६,जी प्रति ३
मनुष्य क्षेत्र छः	४३६	२	४१	ठा ६उ ३ सू.४९०
मनुष्य भव आदि ११ दुर्लभ	७७२	४	१७	आव ह नि गा ८३१पृ ३४१
मनुष्यभव आदि ४ अङ्गों की दुर्लभता बताने वाली बीस गाथा	९०९	६	२६	उत्त अ.३

१ चक्रवर्ती की नौ महानिधियों में से एक निधि।

२ उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीन पदों को मातृकापद कहते हैं। इन्हें जीवादि द्रव्यों में घटाना मातृकानुयोग है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मान निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा.१०उ.३सू.७४१,पन्नप ११ सू १६५,ध.अधि ३श्लो.४१पृ.१२२
मानसंज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ ३सू.७५२,भ श ७उ.८
माया का फल	५७८	३	१६	ठा ८उ ३सू.५६७
माया की आलोयणा के आठ स्थान	५७७	३	१६	ठा ८उ ३ सू ५६७
माया की आलोयणा न करने के आठ स्थान	५७८	३	१८	ठा ८उ ३सू.५६७
माया के चार भेद और उनकी उपमाएं	१६१	१	१२१	पन्न.प १४सू १८८,ठा ४उ २ सू २६३,कर्म.भा १गा.२०
माया के चौदह नाम	८३६	५	३१	सम ५२
माया के सत्रह नाम	८८०	५	३८५	सम ५२
माया दोष	८६६	५	१६५	प्रव द्वा ६७गा ५६७,ध अधि ३ श्लो २२पृ ४०,पि नि गा ४०८, पि वि.गा.४८.पंचा १३गा १८
माया निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा.१०उ.३सू.७४१,पन्न प ११सू. १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
१ मायाप्रत्यया क्रिया	२९३	१	२७८	ठा २उ १ सू ६०,ठा ५उ २सू. ४१६,पन्न प २२ सू २८४
मायावी भावना	४०३	१	४३०	उत्त अ ३६गा.२६३,प्रव द्वा ७३ गा ६४३
माया शल्य	१०४	१	७३	सम ३,ठा ३उ ३सू १८२,ध. अधि ३श्लो २७टी पृ.७६
माया संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ.३सू ७५२,भ श ७उ ८

१ छल एवं माया द्वारा दूसरों को ठगने के व्यापार से लगने वाली क्रिया ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मारणान्तिक समुद्घात	५४८	२	२८८	पन्न प.३६,ठा ७ उ ३सू ५८६, द्रव्यलो.स.३पृ १२४,प्रव द्वा.२३१
मार्ग की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	८४६	६	२६७	नं०सू २७गा.६३टी
मार्गणा चौदह और उसके अवान्तर भेद	६३३	३	१९९	नव गा.३४,कर्म भा ४गा ९
मार्गणा स्थान के अवान्तर भेद बासठ	८४६	५	५७	कर्म भा ४गा १०-१४
मार्गणा स्थान चौदह	८४६	५	५५	कर्म भा.४ गा.९-१४
१ मार्ग दूषण	४०६	२	४३३	उत्त अ ३६गा २६५टी ,प्रव द्वा. ७३गा ६४६
२ मार्गविप्रतिपत्ति	४०६	२	४३३	उत्त अ ३६गा २६५टी ,प्रव द्वा.७३ गा ६४६
मार्दव (मृदुता)	३५०	१	३६५	ठा ५सू ३९६, प्रव द्वा ६६गा ५५८,ध अधि ३श्लो ४६पृ १२७
मार्दव (मृदुता)	६६१	३	२३३	नव.गा २३,सम १०,आ भा.१ प्र.८सं.२भावना
३ मालापहृत दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा.६७गा.५६६,ध.अधि.३ श्लो.२२टी पृ ३८,पिं नि गा ४३,पिं वि गा.४,पंचा १३गा.६
४ मास कल्प	६६३	३	२४०	पंचा १७गा ३५-३७

---

१ ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप सच्चे धर्म में तथा उसके पालन करने वाले साधुओं में कल्पित दूषण बतलाना। २ ज्ञान दर्शन चारित्र रूप सत्यमार्ग को छोड़ कर विपरीत मार्ग की प्ररूपणा करना। ३ ऐसी जगह जहाँ आसानी से हाथ न पहुँच सके वहाँ पर से सीढ़ी या निसैनी आदि लगाकर आहार देना। ४ साधुओं के लिए चतुर्मास या किसी दूसरे कारण के बिना एक मास से अधिक एक स्थान पर न ठहरना मासकल्प कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मास बारह	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १०प्रा.प्रा.१६
१ मासिक अनुद्घातिक	३२५	१	३३३	ठा.५उ २ सू ४३३
२ मासिक उद्घातिक	३२५	१	३३४	ठा ५उ २ सू ४३३
माहण का अर्थ क्या श्रावक भी होता है ?	९८३	७	१२६	भ श १उ ७सू ६२टी, भ श.२ उ ५सू ११२टी
माहेन्द्र देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२१	पन्न प २सू ५३
मिच्छाकार (मिथ्याकार) समाचारी	६६४	३	३५०	भ श २५उ ७सू ८०१,ठा १० उ ३सू ७४९, उत्त अ २६गा ३, प्रव द्वा १०१गा ७६०
३ मितवादी	५९१	३	९२	ठा ८उ ३सू ६०७
मिथ्यात्व आश्रव	२८९	१	२६८	ठा ५उ २ सू ४१८,सम ५
मिथ्यात्व दस	६९५	३	३६४	ठा १०उ ३सू ७३४
मिथ्यात्व पाँच	२८८	१	२६७	ध अधि २श्लो २२टी पृ ३९, कर्म भा ४ गा ५१
मिथ्यात्व प्रतिक्रमण	३२९	१	३३८	ठा ५उ ३सू.४६७,आव.ह अ. ४गा.१२५०-१२५१पृ ५६४
मिथ्या दर्शन	७७	१	५५	भ श ८उ २सू ३२०,ठा ३सू १८४
४ मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया	२९३	१	२७८	ठा २उ.१सू.६०, ठा ५उ २सू ४१९,पन्न.प २२सू २८४
मिथ्या दर्शन शल्य	१०४	१	७४	सम ३,ठा.३उ ३सू.१८२

१ जिस प्रायश्चित्त का भाग न हो यानि गुरु प्रायश्चित्त।

२ जो प्रायश्चित्त विभाग करके दिया जाय यानि लघु प्रायश्चित्त।

३ जीवों के अनन्तानन्त होने पर भी उन्हें परिमित बताने वाले अक्रियावादी।

४ मिथ्या दर्शन अर्थात् तत्त्व में अश्रद्धान या विपरीत श्रद्धान से लगने वाली क्रिया मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया कहलाती है।

१ अपने और साधु के लिए एक साथ पकाया हुआ आहार।

२ इन अवस्थाओं में से नहीं [illegible], इस अवस्था को प्राप्त हुआ आदमी [illegible] से [illegible] होकर अपने जीवन के प्रति भी उदासीन हो जाता है।

* श्री जैन सिद्धान्त बोलसंग्रह भाग २ पृ०२७३ पर षड्ज, मध्यम और गान्धार ग्रामों की जो इक्कीस मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीतशास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा स्थानांग सूत्र में इन तीनों ग्रामों की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है —

मग्गी कोरविआ हरिया, रयणी अ सारकंता य।
छट्ठी अ सारसी नाम, सुद्ध सज्जा य सत्तमा ॥३९॥
उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा।
समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥४०॥
नंदी अ खुद्दिआ पूरिमा य, चउत्थी अ सुद्धगंधारा।
उत्तरगंधारा वि अ, सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥४१॥
सुट्ठुत्तरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा।
अह उत्तरायया कोडिमा य, सा सत्तमी मुच्छा ॥४२॥

अर्थ - षड्ज ग्राम की सात मूर्छनाएं—मार्गी, कौरवी, हरिता, रत्ना, सारकांता, सारसी और शुद्धषड्ज। मध्यम ग्राम की सात मूर्छनाएं—उत्तरमंदा, रत्ना, उत्तरा, उत्तरासमा, समक्रांता, सुवीरा और अभिरूपा। गान्धार ग्राम की सात मूर्छनाएं—नंदी, क्षुद्रिका, पूरिमा, शुद्धगान्धारा, उत्तरगान्धारा, सुष्ठुतरमायामा और उत्तरायतकोटिमा।

१ जिस वनस्पति का मूल भाग बीज का काम देता है, जैसे कमल आदि।

१ मौन व्रत पूर्वक आहार की गवेषणा करने वाला अभिग्रहधारी साधु।

य

१ शुभकर्म बांधने का कारण, सांसारिक पदार्थों पर से राग हटा कर शास्त्रों का पठन पाठन करना, इससे शुभ कर्मों का बन्ध होता है।

१ रस्सी से नाप कर लम्बाई चौड़ाई मालूम करना रज्जु संख्यान कहलाता है।

१ राजा के महलों में आहारादि लेने के विषय में बताया गया साधु का आचार (निशीथ)

२ चक्रवर्ती आदि राजा जिस क्षेत्र के स्वामी हैं उस क्षेत्र में रहते हुए साधुओं को राजा की आज्ञा लेना राजावग्रह है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
राम कृष्णा रानी	६८६	३	३४६	अंत व ८ अ ८
रायप्पसेणी (राजप्रश्नीय) सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२१६	
राशि की व्याख्या और भेद	७क	१	४	सम १४६
[1] राशि संख्यान	७२१	३	४०४	ठा १० उ ३ सू ७४७
राष्ट्र धर्म	६६२	३	३६१	ठा. १० उ. ३ सू ७६०
रुचक प्रदेश आठ	६०७	३	१२५	आचा श्रु १ अ १ उ १ नि गा ५२ टी, आगम, भ श ८ उ ६ सू ३४७ टी, ठा ८ उ ३ सू ६२४
[2] रुचि	१२७	१	९१	भ श १ उ ६ सू ७६
रुचि दस	६९३	३	३६२	उत्त. अ २८ गा १६-२७
रूप मद	७०३	३	३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
[3] रूप सत्य	६९८	३	३६९	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ टी पृ १२१
रूपस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३६, यो प्रका ६, क भा २ श्लो २०६
रूपातीत धर्मध्यान	२२४	१	२०९	ज्ञान प्रक ४०, यो प्रका १०, क भा २ श्लो २०६
रूपी	६०	१	४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू. ४
रूपी अजीव के ५३० भेद	६३३	३	१८१	पन्न प १ सू ३, उत्त अ. ३६ गा ४६
रूपी के दो भेद	६१	१	४२	भ श १२ उ ५ सू ४५०

[1] धान आदि के ढेर का नाप कर या तोल कर परिमाण जानना।

[2] श्रद्धा पूर्वक ज्ञान दर्शन चारित्र आदि के सेवन की इच्छा।

[3] वास्तविकता न होने पर भी रूप विशेष को धारण करने से किसी व्यक्ति या वस्तु को उस नाम से पुकारना रूपसत्य है।

ल

१ जिस समकित के होने पर जीव सदनुष्ठान में रुचि करता है किन्तु आचरण नहीं कर पाता वह रोचक समकित है।

१ वाद का एक दोष, इसके अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असम्भव तीन भेद हैं।

२ दुःसंस्थित या बाँकी लकड़ी की तरह कुबड़ा होकर मस्तक और कोहनी को जमीन पर लगाते हुए एवं पीठ से जमीन को स्पर्श न करते हुए सोने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लव (७स्तोक का एक लव)	५५१	२	२६३	जं.वक्ष.२सू.१८
लवणसमुद्रमें चन्द्रसूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७६६	४	३००	सूर्य प्रा १९सू १००
लाघव	३५०	१	३६५	ठा.५सू ३९६,प्र अभि ३श्लो. ४६पृ १२७,प्रव द्वा ६६गा.५५४
लान्तकदेवलोक का वर्णन	८०८	४	३२२	पन्न प २सू.५३
लाभान्तराय	३८८	१	४१०	कर्म भा.१गा.५२,पन्न प २३
लिंगकुशील	३६६	१	३८४	ठा ५उ.३सू.४४५
लिंग तीन समकित के	८१	१	५६	प्रव द्वा १४८गा [illegible]
लिंग पुलाक	३६७	१	३८२	ठा.५सू ४४५,भ.श २५उ ६
लिप्त दोष(दायक दोष का एक भेद)	६२३	३	२४७	प्रव द्वा ६७ गा.५६८पृ १४८, पिं नि गा ५२०,ध अधि ३श्लो २२टी पृ ४१,पंचा.१३गा २६
लिपियाँ अठारह	८८६	५	४०१	पन्न प.१ सू ३७,सम.१८
* लूक्ष चरक	३५२	१	३६७	ठा ५उ १सू ३९६
* लूक्षाहार	३५६	१	३७१	ठा ५उ १सू ३९६
लेवालेवेणं आगार(आयंबिल का)	५८८	३	४२	आव ह अ ६पृ ८५३,प्रव द्वा. ४ गा २०६
लेश्या का स्वरूप समझाने के लिए दो दृष्टान्त	४७१	२	७४	कर्म भा ४ गा.३३ आव ह अ ४ पृ ६४५
लेश्या छः	४७१	२	७०	भ श.१२ उ ५ सू ४५१,पन्न प १७,कर्म भा ४गा.१३,उत्त अ. ३४,आव ह अ ४पृ ६४५,लोक प्र ३ श्लो २८५-३८२

* [illegible]

१ सीमा (सरहद) की रक्षा करने वाले देव लोकपाल कहलाते हैं।

१ [illegible] है।

[1] जमीन के साथ वस्त्र को रगड़ते हुए उपेक्षा पूर्वक प्रतिलेखना करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वन्दना के बत्तीस दोष	९६९	७	३८	आव ह गा १२०७-१२११ पृ. ५८३, बृ उ ३गा ४४७१-६४, प्रव द्वा २गा १५०-१७३
वन्दना योग्य समय के पाँच बोल	३४९	१	३६४	आव ह अ ३नि गा, ११९९ पृ ५८१, प्रव द्वा २गा १२५
'वमन किये हुए को ग्रहण न करना' विषय पर छः गाथाएं	९९४	७	१८९	
[1] वय स्थविर	९१	१	६६	ठा ३उ ३सू १५९
वरदत्त कुमार की कथा	९१०	६	६०	वि श्र २०
वर्गणा आठ	६१७	३	१३४	विशे गा ६३१-६३७
वर्ग तप	४७७	२	८८	उत्त० अ ३० गा १०
वर्ग वर्ग तप	४७७	२	८८	उत्त अ ३० गा ११
वर्ग वर्ग सख्यान	७२१	३	४०६	ठा १०उ ३ सू ७४७
वर्ग संख्यान	७२१	३	४०६	ठा १०उ ३ सू ७४७
वर्ण नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी प्रति ३सू ८७
वर्ण परिणाम	७५०	३	४३३	ठा. १०उ ३सू ७१३, पन्न प १३
वर्ण पाँच	४१४	१	४३९	ठा ५उ १ सू ३९०
वर्ण संज्वलनता विनय चार	२३७	१	२१७	दशा द ४
वर्णादि के भेद से स्त्रियों का स्वर भेद	५४०	२	२७५	अनु सू १२७ गा ५५, ठा ७ उ ३सू ५५३
वर्तमान अवसर्पिणी के कुलकरों की भार्याओं के नाम	५०९	२	२३८	सम १५७, ठा ७उ ३सू ५५६
वर्तमान अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थङ्कर	९२९	६	१७७	सम १५७ आव ह नि गा. २०९-२६०, आव म गा २३१-३८९, स.ग, प्रव द्वा ७ से ५५

---

1 साठ वर्ष की अवस्था के साधु वय स्थविर (जाति स्थविर) कहलाते हैं।

१ शुभ अध्यवसायों के कारण जो अवधिज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।

* [illegible] इन्द्रियों के वशीभूत आर्त्त [illegible] मरण [illegible] है।

+ [illegible] वस्तु [illegible] दोष [illegible] है।

१ गणि की एक सम्पदा, शिष्यों को शास्त्र पढ़ाने की योग्यता।

२ अपने धर्म में तथा स्वधर्मियों में प्रेम रखना। ३ जिस शरीर में छाती, पेट पीठ आदि अवयव पूरे हों किन्तु हाथ पैर आदि अवयव छोटे हों।

[illegible]

१ आगम तथा युक्ति संगत क्रिया विषय में फल के प्रति संदेह करना।

२ स्त्री रूप देवता अधिष्ठित जप होमादि से सिद्ध होने वाली विद्या का प्रयोग करके आहारादि लेना। ३ वैताढ्य पर्वत अधिवासी प्रज्ञप्ति आदि विद्याओं को धारण करने वाले विशिष्ट शक्ति सम्पन्न व्यक्ति।

१ ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानदाता गुरु का विनय रखना विनयाचार है।

२ विवक्षित वस्तु में जो धर्म है उससे विपरीत धर्म बताने वाला पद।

१ पैर जमीन पर रख कर सिंहासन पर बैठे हुए पुरुष के नीचे से सिंहासन निकाल लेने पर जो अवस्था रहती है उस अवस्था से बैठने वाला साधु।

२ धर्म कार्यों में यथाशक्ति मन वचन काया द्वारा प्रवृत्ति करना वीर्याचार है।

१ [illegible]

२ [illegible]

* गले में फाँसी लगाकर या वृक्ष आदि की शाखा पर लटकने से होने वाला मरण।

१ ज्ञानाचार का एक भेद, सूत्र के अक्षरों का ठीक ठीक उच्चारण करना।

[1] एक वक्त शान्त हुए कलह को फिर से उभाड़ने वाले वचन कहना।

श

१ [illegible] भेद है।

२ [illegible] के [illegible] हैं।

१ जिन कार्यों से चारित्र की निर्मलता नष्ट हो जाती है उन्हें शवलदोप कहते हैं।

२ गाय के आवर्त्त की तरह वृत्त (गोल) गति वाली गोचरी।

१ [illegible] रहा है।

[1] जो दाता श्रमणों का भक्त है उसके आगे श्रमणदान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला याचक श्रमण वनीपक कहलाता है।

* श्री जैनसिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर षड्जग्राम की सात मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीत शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोग द्वार तथा स्थानांग सूत्र में षड्जग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

मग्गी कोरविआ हरिया, रयणी य सारकंता य ।
छट्ठी य सारसी नाम, सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥

अर्थ—मार्गी, कौरवी, हरिता, रत्ना, सारकांता, सारसी और शुद्ध षड्जा।

१ आहार में आधाकर्म आदि दोषों की शंका होने पर भी उसे लेना संकिय (शंकित) दोष है।

१ कथा का एक दोष, प्रस्तुत विषय को छोड़कर अप्रस्तुत विषय को कहना।
२ जिन वनस्पतियों में संख्यात जीव हों, जैसे नालिक तथा फूला फूल

१ ऐसी शक्ति विशेष जिससे शरीर के प्रत्येक भाग से सुना जाय।

१ मांडला का एक दोष, रसलोलुपता के कारण एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य के साथ संयोग करना। २ परिग्रह से निवृत्त साधु का वस्त्र पात्र तथा शरीरादि में ममत्व होना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संसार में आने वाले प्राणियों के दस भेद	७२८	३	४१५	ठा.१०उ.३ सू ७७१
संसारी	७(ख)	१	४	ठा २सू १०१,तत्त्वार्थ अध्या.२सू १०
संसारी जीव के चार प्रकार	१३०	१	९७	ठा ४उ २सू ४३०, भ श २उ.१सू ८८
संसारी जीव के नौ प्रकार से दो दो भेद	८	१	४	
१ ससृष्ट कल्पिक	३५३	१	३६८	ठा ५उ.१सू ३९६
संस्थान छः अजीव के	४६९	२	६९	भ श २५उ ३सू ७२४,पन्न प.१ सू ४,जी प्रति १
संस्थान छः जीव के	४६८	२	६७	ठा ६सू ४९५, कर्म भा १गा.४०
संस्थान नरकावासों का	५६०	२	३३४	जी प्रति ३ सू ८२
संस्थान नरकों में	५६०	२	३४१	भ श.२५उ ३सू ७२४
संस्थान नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८७
संस्थान परिणाम	७५०	३	४३३	ठा १०उ ३सू.७१३,पन्न.प.१३
संस्थान विचय धर्मध्यान	२२०	१	२०४	ठा ४उ १सू २४७
संस्थान सात	५५२	२	२९३	ठा १सू ४७, ठा ७उ ३सू ५४८
संस्थानानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु सू ७१
संहनन (संघयण) छः	४७०	२	६९	पन्न प.२३सू २९३,ठा ६उ.३ सू ४९४,कर्म भा.१गा ३८-३९
संहनन नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति.३ सू ८७
संहरण के अयोग्य सात	५३०	२	२६६	प्रव द्वा २६१ गा १४१६
सकडाल(सद्दाल)पुत्र श्रावक	६८५	३	३१९	उपा अ.७
सकाम मरण	५३	१	३१	उत्त अ ५गा २

१ संसृष्ट अर्थात् खरंटे हुए हाथ या भाजन आदि से दिये जाने वाले आहार को ही ग्रहण करने वाला साधु।

१ आसुरी भावना का एक भेद, हमेशा लड़ाई झगड़े करते रहना, करने के बाद पश्चात्ताप न करना, दूसरे के खमाने पर भी प्रसन्न न होना और सदा विरोध भाव रखना।

१ श्रुत की वाचना देने वाले गुरु के न होने पर श्रुत को स्थिर परिचित करने की अनुज्ञा देने वाले आचार्य।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात वर्षधर पर्वत	५३७	२	२७०	ठा.७उ.३सू५५५,सम ७
सातवादी (सुखवादी)	५६१	३	६४	ठा.८उ ३ सू६०७
सात वास (क्षेत्र) जम्बूद्वीप में	५३६	२	२६६	ठा ७उ ३सू५५५, सम. ७, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू १०
सात विकथा	५३२	२	२६७	ठा.७उ ३ सू ५६६
सात विभंगज्ञान	५५८	२	३०१	ठा ७उ.३ सू ५४२
सातव्यक्तियों(भ०मल्लिनाथ आदि) ने एकसाथ दीक्षा ली	५४३	२	२७७	ठा ७उ ३सू ५६४
सात व्यसन	६१८	६	१५५	ज्ञा.अ १८सू १३७,बृ.उ १नि.गा ६४०,गौ कु.
सात श्रेणी	५४४	२	२८२	ठा ७सू५८१,भ श २५सू७३०
सात संग्रहस्थान आचार्य तथा उपाध्याय के	५१४	२	२४२	ठा.५ उ १सू ३६६,ठा ७उ ३ सू ५४४
सात संस्थान	५५२	२	२६३	ठा १सू ४७,ठा ७उ ३सू ५४८
सात समुद्घात	५४८	२	२८८	पन्न प ३६ सू ३३१,ठा.७ सू ५८६,प्रव द्वा २३१गा १३११-१३१६,द्रव्यलो स ३पृ १२४
सात सेनापति शक्रेन्द्र के	५४१	२	२७६	ठा ७उ ३सू५८२
सात स्थानदुषमाजानने के	५३४	२	२६८	ठा ७उ ३ सू ५५६
सातस्थान सुषमाजानने के	५३५	२	२६६	ठा ७उ ३ सू ५५६
सात स्थान स्थविरकल्प के	५२२	२	२५१	विशे गा ७
१ सात स्वर	५४०	२	२७०	ठा ७उ ३सू५५३,अनु सू १२७
साता और असाता वेदनीय का अनुभाव आठ आठ प्रकार का	५६०	३	६१	पन्न प २३सू२९२

१ इस बोल के अन्तर्गत जो इक्कीस मूर्च्छनाएं छपी हैं उनके सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साता गौरव (गारव)	९८	१	७०	ठा ३ उ ४ सू २१५
साता वेदनीय	५१	१	३०	पन्न प २३ सू २९३, कर्म भा १ गा १२
साता वेदनीय कर्म बाँधने के दस बोल	७६१	३	४४३	भ श ७ उ ६ सू २८६
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की या बारह मुहूर्त की ?	९१८	६	१३९	उत्त अ ३३ गा १९-२०, पन्न प २३ सू २९४
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति दो तरह किस विवक्षा से कही गई है ?	९१८	६	१३९	उत्त अ ३३ गा १९-२०, पन्न प २३ सू २९४
सादिश्रुत	८२२	५	८	नं सू ४३, विशे गा ५३७-५४८
सादि संस्थान	४६८	२	९८	ठा ६ सू ४९५, कर्म. भा १ गा ४०
साधर्मिक अवग्रह	३३४	१	३४५	भ श १६ उ २ सू ५६७, प्रश्न द्वा ८ गा ६८१, आचा श्रु २ चू १ अ ७ उ २
साधु	२७४	१	२५६	भ मंगलाचरण
साधु आलोचना करने योग्य के दस गुण	६७०	३	२५८	भ श २५ उ ७ सू ७९९, ठा १० उ ३ सू ७३३
साधु आलोचना देने योग्य के दस गुण	६७१	३	२५९	भ श २५ उ ७ सू ७९९, ठा १० उ ३ सू. ७३३
साधुओं की सेवा भक्ति के परम्परा फल दस	७०८	३	३८३	ठा ३ उ ३ सू १९०
साधु और सोने की आठ गुणों से समानता	५७१	३	९	पंचा १८ गा ३२-३४

१ मकान, वस्त्र, पात्र आदि वस्तुएं लेने में विशेष प्रकार की मर्यादा धारण करना।

२ आहार के सैंतालीस दोषों में एक दायक दोष है। इसके चालीस भेद हैं। वे ४० भेद श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के तीसरे भाग के बोल नं. ६६३ में दिये गये हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु के चारित्र को दूषित करने वाले दस उपघात दोष	६६८	३	२५४	ठा.१० उ ३ सू ७३८
साधु के तीन मनोरथ	८६	१	६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
साधु के दस कल्प	६६२	३	२३४	पचा १७ गा ६-४०
साधु के पाँच महाव्रत	३१६	१	३२१	दश. अ ४, ठा. ५ उ १ सू ३८६, प्रव द्वा ६ ६ गा ५५३, ध अधि ३ श्लो ३६-४४ पृ. १२०-१२४
साधु के बाईस परिषह	६२०	६	१६०	सम २२, उत्त अ २, प्रव द्वा ८६ गा ६८५, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ६
साधु के बारह विशेषण	८०६	४	३१४	ध वि सू ३६६
[1]साधु के बारह सम्भोग	७६६	४	२६२	निशी उ ५, सम. १२, व्यव उ. ५ भाष्य गा ५०
साधु के बावन अनाचीर्ण	१००७	७	२७२	दश अ ३
साधु के बीस कल्प	६०४	६	६	बृ उ १
साधु के मलादि परठने के लिये दस विशेषण वाला स्थण्डिल	६७६	३	२६४	उत्त अ २४ गा १६-१८
साधु के लिये अकल्पनीय चौदह बातें	८३४	५	२६	बृ उ ३ सू. १६-२१
साधु के लिये, आवश्यक आदि क्रिया के समय उनकी उपेक्षा कर क्या ध्यानादि करना उचित है?	६१८	६	१४३	दश अ ५ उ २ गा ५, गुण श्लो ३०
साधु के लिये आवश्यक बात	४६७	२	१६८	

[1] समान समाचारी वाले साधुओं का सम्मिलित आहार आदि व्यवहार सम्भोग कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु के लिये ग्लान साधु की सेवा करना आवश्यक है या उसकी इच्छा पर निर्भर है?	९८३	७	१०८	बृ गा १८७१-१८७८, भ श २५ उ. ७ सू ८०२, उत्त अ २६ गा. ८-१०, उत्त अ २९ प्रश्न ४३, ओ गा ४८,४९,६२,५३२-३३
साधु (स्थविरकल्पी) के लिये चौदह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	पंच व गा ७७१-७७९
साधु (जिनकल्पी) के लिये बारह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	पंच व गा ७७१-७७८
साधु के लिये वर्जनीय ८ दोष	५८३	३	३८	उत्त अ २४ गा ९
साधु के संयम की विशुद्धि दस	६६९	३	२५७	ठा १० उ ३ सू ७३८
साधु के संयम में संक्षोभ (अशान्ति) होने के दस कारण	७१४	३	३८८	ठा १० उ ३ सू ७३९
साधु के सत्ताईस गुण	९४५	६	२२८	सम २७, आव ह अ. ४ पृ ६४६, उत्त अ ३१ गा १८
साधु के सत्य वचन में भी क्या विवेक होना चाहिये?	९८३	७	१०७	प्रश्न संवरद्वार २ सू २४, सूय. अ. ९ गा २३
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले १६ उद्गम दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा ६७ गा ५६५-५६६, ध. अधि ३ श्लो २२ पृ ३८, पि नि गा ९२-९३, पि वि गा ३-४, पंचा १३ गा ५-६
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७ गा ५६७-५६८, ध अधि ३ श्लो २२ पृ ४०, पि नि गा ४०८-४०९, पि वि गा ५८-५९, पंचा १३ गा १८-१९

* पृष्ठ १४२ पर टिप्पणी देखो।

[1] सूत्र को धारण करने वाला शास्त्र पाठक पुरुष सूत्रधर कहलाता है।

[2] ठाणांग और समवायांग सूत्र के ज्ञाता साधु सूत्रस्थविर कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सेवार्त्तक (छेवट्ट) संहनन	४७०	२	७०	पन्न.प २३ सू.२९३, ठा.६उ.३ सू ४९४, कर्म भा.१ गा.३९
१ सैंतालीसदोषआहारके	१०००	७	२६५	पिं नि.गा.६६९
सैंतीसगाथाएं उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन की	९८४	७	१३३	उत्त.अ.१०
२ सोपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ.अध्या.२सू.५२, भ.श. २० उ.१० सू ६८५
३ सोपक्रम कर्म	२७	१	१९	वि.म ३सू२० टी.
सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रवद्वा ६७गा.५६५-५६८, ध अधि.३श्लो २२टी पृ ३८, पिं नि गा.४०८,४०९,९२, ९३, पिं वि.गा ५८,५६,३४, पचा.१३गा.१८-१९,५-६
सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	
सोलहगाथाएं उत्तराध्ययन सूत्र के पन्द्रहवें अध्ययन की	८६२	५	१५२	उत्त.अ.१५
सोलहगाथाएं दशवैकालिक सूत्र की दूसरी चूलिका की	८६१	५	१४७	दश. चू.२
सोलहगाथाएं बहुश्रुतसाधु की उपमा की	८६३	५	१५५	उत्त अ.११गा.१५-३०
सोलहगाथाएं भगवान् महावीर की वसतिविषयक	८७४	५	१८२	आचा अ ९उ २
सोलहगुणदीक्षालेनेवालेके	८६४	५	१५८	ध अधि.३ श्लो ७३-७८पृ १
सोलह नाम मेरु पर्वत के	८७०	५	१७१	सम.१६, जं.वक्ष.४सू.१०९
सोलह भंग आश्रवआदिके	८६८	५	१६८	भ.श.१६ उ.४ सू.५५४

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो। २ जो आयु पूरी भोगे बिना आयु टूटने के सात कारणों में से किसी कारण से असमय में ही टूट जाय। ३ जिस कर्म का फल उपदेश आदि से शान्त हो जाय।

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जैसे शल्की आदि।

२ पच्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई बूंदें जब तक सूख न जांय अथवा जब तक ओस की बूंदें न सूखें तब तक का पच्चक्खाण।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य	६२३	६	१७०	आचा श्रु २चू १अ.२उ २
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३	२५६	ठा १०उ ३सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७	१	३७१	ठा ५उ १सू ३६६
स्थापन दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७गा ५६५,ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ३८,पि नि गा ६२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५उ ३सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ २उ १ नि गा १८३
स्थापना दोष	३४७	१	३५६	आव ह अ ३नि गा ११०७ पृ. ५१७,प्रव द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०६	१	१८७	अनु सू १५०,न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३	३६०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२	२६२	विशे गा १३६०
स्थापनाप्रमाणनाम के ७भेद	७१६	३	४००	अनु सू १३० गा ८५
स्थापनार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १नि गा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८	३	३६६	ठा १०सू ७४१,पन्न प ११ सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५उ २ सू ४३३
स्थावर	८	१	५	ठा २उ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१	४३७	ठा.५उ १सू ३६३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है। जैसे शतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना।

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है। जैसे शतरंज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना।

ह

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हेतु दोष	७२२	३	४०६	ठा १०उ ३सू ७४३
हेतु विरुद्धोपलब्धि के ७ भेद	५५५	२	२९६	रत्ना परि ३सू ८३-९२
ह्रस्व संस्थान	५५२	२	२९३	ठा १सू ४७,ठा ७उ ३सू ५४८

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यद्वा स्याद्बुद्धिप्रमादितम् ।
दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः ॥

भावार्थ–श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में तथा उनके विषयानुक्रमसूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम मंगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टिं वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ–सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायँ, दुर्भिक्ष(दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सुखों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

✱ मूर्छनाओं के सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

१ सूत्र को धारण करने वाला शास्त्र पाठक पुरुष सूत्रधर कहलाता है।

२ ठाणांग और समवायांग सूत्र के ज्ञाता साधु सूत्रस्थविर कहलाते हैं।

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो। २ जो आयु पूरी भोगे बिना आयु टूटने के सात कारणों में से किसी कारण से असमय में ही टूट जाय। ३ जिस कर्म का फल उपदेश आदि से शान्त हो जाय।

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जैसे शल्लकी आदि।

२ पच्चक्खाण करने में एक तरह का सकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई बूंदें जब तक सूख न जांय अथवा जब तक ओस की बूंदें न सूखें तब तक का पच्चक्खाण।

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है। जैसे शतरंज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना।

ह

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यद्वा स्याद्धीप्रमादितम् ।
दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः ॥

भावार्थ–श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सा[illegible]ों में तथा उनके विषयानुक्रमसूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम मंगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टिं वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ–सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायँ, दुर्भिक्ष(दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सुखों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!